सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 83, नई दिल्ली, सोमवार 02 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन बदलने के लिए लड़ना पड़ता है और आसान करने के लिए जीवन को समझना जरूरी है।

03 आदमी पार्टी नेता आज झुग्गी क्लस्टर वालों को भड़काने में लगे हैं : सचदेवा
06 नैतिक मूल्यों और भौतिक प्रगति के बीच की खाई को पाटना
08 विकास बनाम विनाश: कुदरत के सबक को कब पढ़ेगा इंसान?

क्या आप जानते हैं प्रदूषण के नाम पर कितनी बड़ी की ठगी सरकारी विभागों ने

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली भारत देश की राजधानी और प्रदूषण का चैंबर इस बात को भारत के देश वासी ही नहीं दुनिया जानती होगी। पर इस **प्रदूषण के नाम पर दिल्ली सरकार और सरकारी विभागो ने जो कार्य किए क्या वह सच में प्रदूषण नियंत्रण के लिए थे या था पीछे का छुपा हुआ कोई बड़ा खेल?** सरकारी विभागों और दिल्ली सरकार के द्वारा किए गए सभी प्रयत्नों के बाद भी प्रदूषण तो नियंत्रित नहीं हुआ पर **जनता को लगा बड़ा फाइनेंशियल झटका।** इसके अलावा जो हुआ वह जानकर आप चौक जाएंगे। जी हां इन सरकारी अधिकारियों के कारण कुछ लोग बन गए खकपति से अरबपति यानी कंगाल से अमीर।

दिल्ली परिवहन विभाग ने दिल्ली से बाहर पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो जो कही ना कही से उनके जानकार थे उनको दिल्ली में बिना किसी सही प्रक्रिया का प्रयोग कर

1. परिवहन विभाग के लिए दिल्ली में चल रहे डीजल 10 साल से अधिक और अन्य 15 साल से अधिक को उठा कर स्क्रैप करने के नाम से जोड़ लिया,
2. उसके बाद उनको दिल्ली में चल रहे बिना फिटनेस, बिना पूर्ण एमवी एक्ट के नियमानुसार कागजात से चल रहे वाहनों को उठाने और स्क्रैप करने का फैसला दे दिया जो किसी भी कानून में नहीं हैं,
3. उसके बाद लोगों के घर में या घर के बाहर खड़े 10 साल पूरे कर चुके डीजल और 15 साल पूरे कर चुके अन्य वाहनों को उठाकर स्क्रैप करने का फैसला दे दिया,
4. उसके बाद बिना पूर्ण एमवी एक्ट के नियमानुसार कागजात के खड़े वाहनों को उठाकर स्क्रैप करने का आदेश जारी कर दिया जो किसी कानून के तहत सही नहीं
5. इसके अलावा जो कार्य परिवहन आयुक्त ने किया वह था परिवहन विभाग में अपने साथ जुड़े हुए अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो से वाहन उठवाने और स्क्रैप करवाने के लिए दिल्ली यातायात पुलिस और दिल्ली नगर निगम को पत्र जारी कर दिया।

कुल मिलाकर दिल्ली में उपलब्ध सभी वाहनों को किसी भी तरह से उठवाकर अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को सुपुर्द करने का कार्य कर दिया।

अब जाने इसके फायदे

1. इन वाहन स्क्रैप डीलरो ने उठाए गए वाहनों का मिनिमम मूल्य भी ना तो वाहन मालिकों को दिया और ना ही सरकारी विभागों में जमा करवाया,
2. इन वाहन स्क्रैप डीलरो ने इन वाहनों के स्क्रैप करने से बनने वाली सीओडी जो वाहन मालिकों को मिलनी चाहिए थी उसको भी बाजार में बेच कर मोटा पैसा बटोर लिया
3. इन वाहन स्क्रैप डीलरो ने उठाए गए वाहनों को स्क्रैप किया या नहीं या बाहर बाजार में इन्हें बेच दिया की भी कोई जानकारी नहीं दी

इतना सब होने पर भी सभी है चुप इसका अर्थ तो एक अज्ञानी बालक भी समझ सकता हैं फिर गृह मंत्रालय भारत सरकार को क्यों नहीं दिख रहा बड़ा सवाल ?

जनवरी से मई के दौरान दिल्ली के एक्यूआई में हुआ बेहतर, पिछले वर्ष की तुलना में आया सुधार

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के अनुसार दिल्ली में जनवरी से मई के बीच एक्यूआई में सुधार हुआ है। इस साल औसत एक्यूआई 214 रहा जो पिछले वर्षों से बेहतर है। पीएम 2.5 और पीएम 10 का स्तर भी कम हुआ है। रविवार को दिल्ली का एक्यूआई 197 दर्ज किया गया जो मध्यम श्रेणी में है। फिलहाल एक्यूआई में वृद्धि की संभावना नहीं है।

नई दिल्ली। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के मुताबिक जनवरी से मई की अवधि में दिल्ली के औसत एक्यूआई में पिछले कुछ वर्षों के बनिस्पत उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इस साल इस अवधि का औसत एक्यूआइ 214 रहा है, जबकि 2024 में यह 231, 2023 में 213, 2022 में 238 और 2021 में 235 था। सीएक्यूएम के अनुसार 2025 में जनवरी से मई में एक भी दिन ऐसा नहीं होगा जब औसत एक्यूआइ 400 से अधिक हो। वर्ष 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023 और 2024 के दौरान क्रमशः 03, 07, 02, 05, 01, 03 और 03 ऐसे दिन थे।

इसी जनवरी से मई की अवधि में दिल्ली में पीएम 2.5 की सांद्रता का स्तर 2018 (कोविड के कारण लॉकडाउन के वर्ष 2020 को छोड़कर) के बाद से इसी अवधि की तुलना में सबसे कम देखा गया है। इस साल इस अवधि में पीएम 2.5 का औसत स्तर 95 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा। जबकि 2024 में यह 111, 2023 में 101, 2022 में 110, 2021 में 117, 2019 में 116 और 2018 में 119 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा था।

जनवरी-मई की अवधि में दिल्ली में पीएम 10 सांद्रता का स्तर भी सबसे कम देखा गया। इस वर्ष 208 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज किया गया, जबकि 2024 में यह 234, 2023 में 216, 2022 में 244, 2021 में 241, 2019 में 241 और 2018 में 256 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा था।

दिल्ली का एक्यूआई 197 दर्ज किया गया

उधर रविवार को केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक रविवार को दिल्ली का एक्यूआइ 197 दर्ज किया गया। एक दिन पूर्व शनिवार को यह 241 रहा था। यानी 24 घंटे के दौरान 44 अंकों की गिरावट हुई है। इसे मध्यम श्रेणी में रखा जाता है। एनसीआर के शहरों का एक्यूआइ भी कहीं संतोषजनक तो कहीं मध्यम श्रेणी में बना हुआ है। हाल फिलहाल इसमें वृद्धि होने की संभावना भी नहीं लग रही।

दिल्लीवालों के लिए गुड न्यूज, सड़कों पर उतरेंगी 401 नई बसें; जानिए क्या है खासियत

दिल्ली में जल्द ही 401 नई 9 मीटर लंबी इलेक्ट्रिक बसें चलने लगेंगी जिससे सार्वजनिक परिवहन और लास्टमाइल कनेक्टिविटी बेहतर होगी। ये बसें देवी सेवा योजना के तहत मिलेंगी और इनमें सीसीटीवी कैमरे लाइव ट्रैकिंग पैनिक बटन जैसी आधुनिक सुविधाएं होंगी। परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह ने बताया कि इन बसों को 10 से 15 जून के बीच लॉन्च किया जाएगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली वालों के लिए लास्टमाइल कनेक्टिविटी को लेकर सार्वजनिक परिवहन की सुविधा में कुछ और राहत मिलने जा रही है। लास्टमाइल कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए दिल्ली को देवी सेवा योजना के तहत इस माह के मध्य से पहले 401 नई 9 मीटर लंबी इलेक्ट्रिक बसें दिल्ली को मिलेंगी।

दिल्ली में अभी कितनी बसें चल रही?

वर्तमान में 2,000 से अधिक इलेक्ट्रिक बसें हैं। इसमें दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) बेड़े के तहत लगभग 1,800 बसें और डीआईएमटीएस क्लस्टर योजना के तहत

400 बसें शामिल हैं। वर्तमान में 2000 में से इस श्रेणी की 400 बसें दिल्ली में चल रही हैं। नई आने वाली बसों की संख्या के बाद इन बसों की संख्या 800 हो जाएगी।

कब से चलेंगी नई बसें?

दिल्ली के परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह ने बताया कि शहर की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को मजबूत करने और स्वच्छ गतिशीलता को बढ़ावा देने के लिए 401 नई इलेक्ट्रिक बसें जोड़ी जा रही हैं। आने वाले महीनों में संख्या में वृद्धि जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि नई 9 मीटर इलेक्ट्रिक बसें 10 से 15 जून के बीच लॉन्च की जाएंगी।

क्या है देवी बसों की खासियतें?

इस महीने की शुरुआत में सरकार ने देवी बसें लॉन्च की थीं। देवी बसों में सीसीटीवी कैमरे, लाइव ट्रैकिंग, पैनिक बटन और दिव्यांग यात्रियों के लिए मोटराइज्ड रैंप की सुविधा है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अपने बजट भाषण के दौरान घोषणा की थी कि शहर की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को मजबूत करने के लिए केंद्रीय वित्त पोषण के साथ दिल्ली में शहरी परिवहन परियोजनाएं लागू की जाएंगी।

उन्होंने बजट में कहा था कि इस साल के अंत तक लगभग 5,500 बसों का रखरखाव किया जाएगा और 2026 तक 11,000 बसें सड़कों पर होंगी। सिस्टम में खामियों को दूर करने के लिए बस मार्गों का भी पुनर्मूल्यांकन किया जाएगा।

दिल्ली मेट्रो ने सुरक्षा जांच के नियमों में किया बदलाव

दिव्यांगों और बुजुर्गों समेत इन लोगों को स्टेशनों पर मिलेगी प्राथमिकता

दिल्ली मेट्रो में दिव्यांग बुजुर्ग और गर्भवती महिलाओं को सुरक्षा जांच में प्राथमिकता मिलेगी। उन्हें लाइन में लगने की जरूरत नहीं होगी। एनसीआर के सभी 289 स्टेशनों पर यह सुविधा शुरू की जा रही है। डीएमआरसी और सीआईएसएफ मिलकर यह सुनिश्चित कर रहे हैं। महिलाओं के लिए पहले से ही अलग सुविधा है अब अन्य जरूरतमंदों को भी लाभ मिलेगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। मेट्रो में सफर करने वाले दिव्यांग, बुजुर्ग यात्रियों और गर्भवती महिलाओं के लिए अच्छी खबर है। मेट्रो स्टेशनों पर सुरक्षा जांच (जांच) में उन्हें प्राथमिकता मिलेगी। इसलिए उन्हें स्टेशनों पर सुरक्षा जांच के लिए लाइन में खड़े होने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

प्राथमिकता के आधार पर उनकी सुरक्षा जांच पहले की जाएगी। इससे वे मेट्रो में आसानी से सफर कर सकेंगे। एनसीआर में मेट्रो नेटवर्क करीब 393 किलोमीटर है और कुल 289 मेट्रो स्टेशन हैं। उन सभी स्टेशनों के सुरक्षा (जांच) प्वाइंट पर लगी स्कैनर मशीनों पर व्हील चेयर के सहारे सफर करने वाले यात्रियों, दृष्टिबाधित यात्रियों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और घायलों को प्राथमिकता दिए जाने की जानकारी दर्ज की जा रही है।

हालांकि, मेट्रो स्टेशनों पर महिलाओं की सुरक्षा जांच के लिए पहले से ही अलग से सुविधा है, लेकिन सरोजनी नगर समेत कई स्टेशन ऐसे हैं, जहां व्यस्त समय में महिलाएं भी सुरक्षा जांच के लिए लंबी कतारों में खड़ी रहती हैं। इससे गर्भवती महिलाओं और गोद में छोटे बच्चे को लेकर सफर करने वाली महिलाओं को परेशानी होती है। उन्हें अब सुरक्षा जांच में

प्राथमिकता मिलेगी।

मेट्रो स्टेशनों पर दिव्यांगों और बुजुर्गों की त्वरित सुरक्षा जांच का कोई प्रावधान नहीं था। इस कारण उन्हें सुरक्षा जांच के लिए लाइन में खड़ा होना पड़ता था, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (डीएमआरसी) का कहना है कि केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) की मदद से सभी मेट्रो स्टेशनों पर यह सुविधा शुरू की जा रही है। इसका मकसद दिव्यांगजनों, गर्भवती महिलाओं, महिलाओं, बुजुर्गों और घायल व्यक्तियों को सुविधा प्रदान करना है।

गौरतलब है कि मेट्रो में पहला कोच महिलाओं के लिए आरक्षित होता है। इसके अलावा मेट्रो ट्रेनों के सभी कोचों में महिलाओं, बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए सीटें भी आरक्षित होती हैं।

तेज रफ्तार ऑटो ने मारी पीसीआर वैन को टक्कर

दिल्ली के तिलक मार्ग इलाके में एक तेज रफ्तार ऑटो चालक ने पीसीआर वैन को टक्कर मार दी जिससे ऑटो में सवार पिता-पुत्र घायल हो गए। पुलिस ने आरोपी चालक मिंटू को गिरफ्तार कर लिया है। घायल सरफराज और सुहैल सफदरजंग अस्पताल जा रहे थे जब यह हादसा हुआ। मिंटू के तेज और लापरवाही से वाहन चलाने के कारण यह दुर्घटना हुई।

नई दिल्ली। तिलक मार्ग थाना क्षेत्र में तेज रफ्तार ऑटो चालक ने ऑटो को जिग-जैग तरीके से चलाते हुए आगे चल रही पीसीआर को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि ऑटो पलट गया और उसमें बैठे पिता-पुत्र घायल हो गए। पुलिसकर्मियों ने दोनों को उपचार के लिए एलएन में भर्ती कराया और आरोपी ऑटो चालक को गिरफ्तार कर लिया, जिसकी पहचान जाफराबाद निवासी मिंटू के रूप में हुई है। घायल पिता-पुत्र की पहचान सीलमपुर निवासी सरफराज और बेटे सुहैल के रूप में हुई है। सरफराज पेशे से ई-रिक्शा चालक है। पुलिस अधिकारी के मुताबिक 19 मई की सुबह सरफराज अपने बेटे का इलाज कराने ऑटो से सफदरजंग अस्पताल जा रहा था। इस दौरान ऑटो चालक मिंटू तेज रफ्तार से ऑटो को जिग-जैग तरीके से चला रहा था। सरफराज ने चालक से कई बार ऑटो सही तरीके से चलाने के लिए कहा। लेकिन वह गलत तरीके से ऑटो चलाता रहा। वे सुबह पांच बजे सुप्रीम कोर्ट के पास पहुंचे ही थे कि ऑटो चालक ने अपने आगे चल रही पीसीआर को पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर लगने से ऑटो सड़क पर पलट गया और उसमें सवार पिता-पुत्र घायल हो गए।

तेलंगाना स्थापना दिवस आज

हर साल 2 जून को भारत में तेलंगाना स्थापना दिवस मनाया जाता है। बता दें कि 2 जून 2014 को तेलंगाना, भारत का 28वां राज्य बना था। यह दिन उन लोगों के योगदान को चिह्नित करता है जिन्होंने आंध्र प्रदेश के बाहर एक अलग राज्य के लिए लड़ाई लड़ी। राज्य इस अवसर को जिलों में औपचारिक कार्यक्रमों के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों के साथ मनाता है जो तेलंगाना के इतिहास और परंपराओं को प्रदर्शित करते हैं।

तेलंगाना स्थापना दिवस का इतिहास क्या है?

==========

1956 में आंध्र प्रदेश के गठन के लिए हैदराबाद राज्य के आंध्र राज्य के साथ विलय के बाद 1950 में एक अलग तेलंगाना राज्य की मांग उठी। तेलंगाना को एक नए राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक समूहों द्वारा कई आंदोलन और आंदोलन शुरू किए गए। सबसे प्रमुख आंदोलन का नेतृत्व तेलंगाना राष्ट्र समिति (TRS) पार्टी ने किया था, जिसकी स्थापना 2001 में के.चंद्रशेखर राव ने की थी। सालों की बातचीत और विचार-विमर्श के बाद कांग्रेस कार्य समिति ने 1 जुलाई 2013 को एक अलग तेलंगाना राज्य के गठन की सिफारिश करने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया। आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम 2014 को फरवरी 2014 में संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित किया गया, जिससे इसके बिभाजन का रास्ता खुल गया। अधिनियम को राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त हुई और 1 मार्च 2014 को इसके बारे अखबार में प्रकाशित किया गया। तेलंगाना राज्य का गठन आधिकारिक तौर पर 2 जून 2014 को हुआ था, जिसकी राजधानी हैदराबाद थी।

तेलंगाना से जुड़े रोचक तथ्य

==========

तेलंगाना से जुड़े रोचक तथ्य निम्नलिखित है :

तेलंगाना की स्थापना 2 जून 2014 के दिन हुई थी।

इस साल तेलंगाना अपना 10वां स्थापना दिवस मनाएगा।

तेलंगाना की आबादी 3.5 करोड़ से अधिक है।

तेलंगाना की चार प्रमुख भाषाएं तेलुगु, उर्दू, हिंदी और अंग्रेजी हैं।

तेलंगाना की अर्थव्यवस्था कृषि, सेवा क्षेत्र और उद्योग पर आधारित है।

तेलंगाना को इसकी समृद्ध संस्कृति और विरासत के लिए जाना जाता है।

तेलंगाना में कई लोकप्रिय त्यौहार मनाए जाते हैं।

तेलंगाना का कुल क्षेत्रफल 112,077 वर्ग किलोमीटर है।

तेलंगाना की प्रमुख नदियां गोदावरी नदी, कृष्णा नदी और मन्नार नदी शामिल हैं।

तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद है।

उगते सूर्य को जल क्यों देते हैं ?

उगते हुए सूर्य को जल देने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। बहुत से लोग आज भी इसका पालन करते हैं इसके पीछे धार्मिक मान्यता हीं नहीं बल्कि वैज्ञानिक आधार भी है। धार्मिक दृष्टि से बात करें तो बिना सूर्य को जल अर्पित किये भोजन करना महा पाप है। इस बात का उल्लेख 'स्कंद पुराण' में मिलता है।

स्कंद पुराण में इस बात का उल्लेख संभवतः इसलिए किया गया है क्योंकि सूर्य और चन्द्र प्रत्यक्ष देवता हैं। इनकी किरणों से प्रकृति में संतुलन बना रहता है। इन्हीं के कारण अनाज और फल-फूल उत्पन्न होते हैं। इसलिए इनका आभार व्यक्त करने के लिए प्रातः काल जल अर्पित करने की बात कही गयी है।

धार्मिक कारण की अपेक्षा उगते सूर्य को

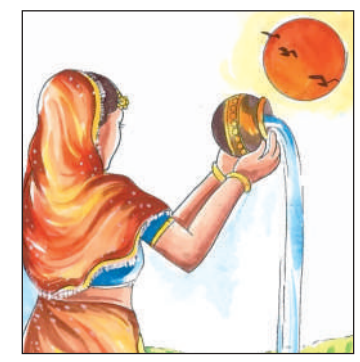

जल देने के पीछे वैज्ञानिक कारण अधिक प्रभावी है। जल चिकित्सा और आयुर्वेद के अनुसार प्रातः कालीन सूर्य को सिर के ऊपर पानी का बर्तन ले जाकर जल अर्पित करना चाहिए। जल अर्पित करते समय अपनी दृष्टि जलधार के बीच में रखें ताकि जल से छनकर सूर्य की किरणें दोनों आंखों के मध्य में आज्ञाचक्र पर पड़े। इससे आंखों की रोशनी और बौद्धिक क्षमता बढ़ती है जल से छनकर सूर्य की किरणें जब शरीर पर पड़ती हैं तो शरीर में उर्जा का संचार होता है। शरीर में रोग से लड़ने की शक्ति बढ़ती है साथ ही आस-पास सकारात्मक उर्जा का संचार होता है जो जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

आधुनिक विज्ञान. . . जब हम सूर्य को जल चढ़ाते हैं और पानी की धारा के बीच उगते सूरज को देखते हैं तो नेत्र ज्योति बढ़ती है, पानी के बीच से होकर आने वाली सूर्य की किरणों जब शरीर पर पड़ती हैं तो इसकी किरणों के रंगों का भी हमारे शरीर पर प्रभाव पड़ता है। जिससे विटामिन डी जैसे कई गुण भी मौजूद होते हैं. इसलिए कहा गया है कि जो उगते सूर्य को जल चढ़ाता है उसमें सूर्य जैसा तेज आता है।

ज्योतिषशास्त्र में कहा जाता है कि कुण्डली में सूर्य कमज़ोर स्थिति में होने पर उगते सूर्य को जल देना चाहिए। सूर्य के मजबूत होने से शरीर स्वस्थ और उर्जावान रहता है। इससे सफलता के रास्ते में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं।

ज़रा गौर करें, हमारी परम्पराओं के पीछे कितना गहन विज्ञान छिपा हुआ है. . . ये इस देश का दुर्भाग्य है कि हमारी परम्पराओं को समझने के लिए जिस विज्ञान की आवश्यकता है वो हमें पढ़ाया नहीं जाता और विज्ञान के नाम पर जो हमें पढ़ाया जा रहा है उस से हम अपनी परम्पराओं को समझ नहीं सकते।

हृदय को मुक्त और व्यापक बनाने से ही जीवन का वास्तविक सुख संभव है। प्रत्येक के जीवन में आंतरिक कलह है

यहां जिसे एक तरह की धन-संपदा/आजीविका मिली है वह भी दुखी हैं जिसे वैसी नहीं मिली है, वह भी दुखी है। वास्तव में जिसे जो भी मिला है, वह अपने से आगे किसी और को देखकर दुखी है। ऐसा तो कोई नहीं है जो सबसे उत्तम पा चुका हो। सोचें जब कोई सबसे ऊंची चोटी/शीर्षस्थ पर पहुंच जाये तो वह क्या सुखी हो जायेगा? नहीं वह भी सुखी नहीं होगा। क्योंकि यहां चोटी पर पहुंचने की निरंतर होड़ चल रही है कि किसी को हटाकर अपना पद ऊंचा करें। जब निरंतर चोटी पर लोग प्रयास कर रहें हैं तो पहुंचा व्यक्ति कितनी देर उस पद/चोटी/शीर्ष पर ठहर पायेगा। पहुंचकर भी निरंतर डर/व्याकुलता में ही कंपायमान रहता है। अभी पहुंचा ही नहीं कि समझें, कि उतारने वाले भी तुरंत आ गये। ऐसे में पाकर भी क्या पाया जा सकता है? लेकिन ऐसा नहीं है कि हम अप्रयास ही रह जायें तो सुखी हो जायेंगे। कुछ न करने, न कर पाने का 'शूल' बहुत गहरा होता है। वह जीवन भर कचोटता है कि 'हमने कुछ किया क्युंकर नहीं।' ध्यान रहे कि कर-करके भी यहां कुछ मिलता नहीं और बिना किए चैन किसी को आता नहीं। इसलिए कर्म हमारे हाथ में दिया है और परिणाम 'उसका/परम का' प्रसाद है। यदि हम इसमें पग जायें तो दुख हमें छू भी नहीं पायेगा।

विमान में भोजन

मैं अपनी सीट पर बैठा था, दिल्ली के लिए उड़ान भरते हुए — लगभग 6 घंटे की यात्रा थी। मैंने सोचा, एक अच्छी किताब पढ़ूंगा और एक घंटा सो लूंगा। टेकऑफ़ से ठीक पहले, लगभग 10 सैनिक आए और मेरे आसपास की सीटों पर बैठ गए। यह देखकर मुझे रोचक लगा, तो मैंने बगल में बैठे एक सैनिक से पूछा, "आप कहां जा रहे हैं?"

"आगरा, सर! वहां दो हफ्ते की ट्रेनिंग है, फिर हमें एक ऑपरेशन पर भेजा जाएगा," उसने जवाब दिया।

एक घंटा बीत गया। एक घोषणा हुई — "जो यात्री चाहें, उनके लिए लंच उपलब्ध है, खरीद के आधार पर।"

मैंने सोचा — अभी लंबा सफर बाकी है, शायद मुझे भी खाना लेना चाहिए। जैसे ही मैंने वॉलेट निकाला, मैंने सैनिकों की बातचीत सुनी।

"चलो, हम भी लंच ले लें?" एक ने कहा।

"नहीं यार, यहां बहुत महंगा है। जमीन पर उतरकर किसी ढाबे में खा लेंगे," दूसरे ने कहा।

"ठीक है," पहला बोला।

मैं चुपचाप एयर होस्टेस के पास गया और कहा, "इन सभी को लंच दे दीजिए।" और मैंने सबका भुगतान कर दिया।

उसकी आंखों में आंसू थे। बोली, "मेरे छोटे भाई की पोस्टिंग कारगिल में है, सर। ऐसा लगा जैसे आप उसे खाना खिला रहे हों। धन्यवाद।" उसने सिर झुकाकर नमस्कार किया।

वो पल मेरे दिल को छू गया।

आधे घंटे में सभी सैनिकों को उनके लंच बॉक्स मिल गए।

खाना खत्म करने के बाद, मैं फ्लाइट के पीछे वॉशरूम की ओर गया। पीछे की सीट से एक वृद्ध व्यक्ति आए।

"मैंने सब देखा। आप सराहना के पात्र हैं," उन्होंने हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"मैं भी इस पुण्य में भाग लेना चाहता हूँ," उन्होंने चुपचाप ₹500 मेरे हाथ में रख दिए।

मैं वापस अपनी सीट पर आ गया।

आधे घंटे बाद, विमान का पायलट मेरी सीट तक आया, सीट नंबर देखता हुआ।

"मैं आपका हाथ मिलाना चाहता हूँ," वह मुस्कुराया।

मैं खड़ा हुआ। उसने हाथ मिलाते हुए कहा, "मैं कभी फाइटर पायलट था। तब किसी ने यूं ही मेरे लिए भोजन खरीदा था। वो प्यार का प्रतीक था, जो मैं कभी नहीं भूला। आपने वही याद ताज़ा कर दी।"

सभी यात्रियों ने ताली बजाई। मुझे थोड़ी झिझक हुई। मैंने ये सब प्रशंसा के लिए नहीं किया था — बस एक अच्छा कार्य किया।

मैं थोड़ा आगे बढ़ा। एक 18 साल का युवक आया, हाथ मिलाया और एक नोट मेरी हथेली में रख दिया।

यात्रा समाप्त हो गई।

जैसे ही मैं विमान से उतरने के लिए दरवाजे पर पहुंचा, एक व्यक्ति चुपचाप कुछ मेरी जेब में रखकर चला गया — फिर एक नोट।

विमान से बाहर निकलते ही देखा, सभी सैनिक एकत्र थे। मैं भागा, और सभी यात्रियों द्वारा दिए गए नोट्स उन्हें सौंप दिए।

"इसे आप खाने या किसी भी ज़रूरत में उपयोग करिए जब तक ट्रेनिंग साइट पर पहुंचें। जो हम देते हैं, वो कुछ भी नहीं है उस बलिदान के आगे जो आप हमारे लिए करते हैं। भगवान आपको और आपके परिवारों को आशीर्वाद दे," मैंने नम आंखों से कहा।

अब वे दस सैनिक केवल रोटी नहीं, एक पूरे विमान का प्यार साथ लेकर जा रहे थे।

मैं अपनी कार में बैठा और चुपचाप प्रार्थना की —

"हे प्रभु, इन वीर जवानों की रक्षा करना, जो इस देश के लिए जान देने को तैयार रहते हैं।"

एक सैनिक एक खाली चेक की तरह होता है — जो भारत के नाम पर किसी भी राशि के लिए भुनाया जा सकता है — यहां तक कि जीवन तक।

दुर्भाग्य है कि आज भी बहुत लोग इनकी महानता नहीं समझते।

चाहें इसे साझा करें या कॉपी करें — यह आपका निर्णय है।

पर जब भी इसे पढ़ें, आंखें नम हो जाती हैं।

पढ़िए। आगे बढ़ाइए।

भारत माता के बेटों का सम्मान — स्वयं का सम्मान है।

जय हिंद

कहानी : गोदना (टैटू)

(सत्य घटना पर आधारित)

कविता एक पढ़ी-लिखी और सुलझी हुई महिला थी। गांव में उसकी अच्छाई और गुणों की खूब चर्चा रहती थी। सिंपल और सादगी पूर्ण जीवन जीने वाली कविता हमेशा दूसरों की मदद करती थी। खास कर महिलाओं की। गांव में कुछ महिलाएं कविता के पास अपनी समस्या लेकर आ जाती थीं। कविता जिसका बखूबी निदान किया करती थी। कुछ महिलाएं अपने सास-ससुर से घरेलू हिंसा और प्रताड़ना की शिकायतें लेकर आ जाती थीं। तो कुछ अपने बेटा बहु का ही रोना रोती थी। कविता संवैधानिक रूप से दोनों पक्षों को सलाह मशवरा देकर घर पर ही सुलह करवा दिया करती थी। न कोर्ट कचहरी का चक्कर न वकीलों को मोटी फीस देना का झंझट। कविता हर तरह की समस्या को घर पर ही सुलझा देती थी। कुछ लोगों को इमरजेंसी रूपये पैसों की भी जरूरत पड़ जाती थी। तो कविता अपने पति को बोलकर उन्हें पैसे भी दिलवा देती थी। इसी तरह कविता लोगों की नेकी भलाई में लगी रहती थी। कविता को लडाई झगडे पसंद नहीं थे। वह शांति प्रिय महिला थी। लोगों को भी आपस में प्रेम पूर्वक रहने की सलाह दिया करती थी। एक दिन कविता अपने दुकान में बैठी थी। पड़ोस की एक अधेड़ उम्र की महिला उसके दुकान पर आई। कविता ने उसे प्रणाम किया। बैठने के लिए कुर्सी दी। रिश्ते में वह महिला कविता की बुआ सास लगती थी। बुआ सास ने पूंछा तुमने घर का काम कर लिया बेटी? कविता ने उत्तर दिया। हां बुआ जी। मेरे घर में सब्जी नहीं है। खाना बना लिया होगा, तो थोड़ी सब्जी मुझे भी दे देना। बुआ ने कहा। कविता बोली 'हां बुआ जी! सब्जी बन चुकी है। मैं लाती हूं आप जरा बैठिए। कविता जैसे ही भीतर जाने के लिए कुर्सी से उठी है। बुआ ने अचानक उसे रोकते हुए कहा। रुक तो - रूक तो। हाथ पैर देखते हुए। क्या तुमने गोदना नहीं गुदवाया है अब तक ? तुम्हारे हाथ पैर में कहीं पर भी गोदने का निशान नहीं है। चेहरे पर भी एक मुठकी (बिंदु) तक नहीं गुदवाई। कविता ने उत्तर दिया। नहीं बुआ जी मेरे शरीर में कहीं पर भी गोदने का निशान नहीं है। मैंने गुदवाई ही नहीं है। बुआ ने कहा क्यों नहीं गुदवाई? बेटी जरूर गुदवा लेना। मरने के बाद जो लोग गोदना नहीं गुदवाये रहते। ऊपर स्वर्गलोक में भगवान और यमराज खुद उन्हे शाबर से (जमीन खोदने वाले लोहे के औजार से) बड़ा - बड़ा गोदना गोदते हैं। तभी स्वर्ग में जगह मिलती है। गोदने का निशान न मिलने पर तरह - तरह के कष्ट देते हैं। खौलते तेल मे डुबाते हैं। आग में नंगे पैर चलाते हैं। कांटों में सुलाते हैं। तुम बहुत नेक दिल हो, सबकी मदद करती हो। बूरी मौत न मिले इसलिए बोल रही हूं। गुदना गुदवा ही लेना। उपर से तुम इतनी गोरी हो। कि चक से दिख जायेगा, कि शरीर में कहीं गोदने का निशान नहीं है। गोदना गुदवा ही लेना। मरते समय जल्दी मुक्ति मिल जायेगी। जीव को कहीं भटकना नहीं पड़ेगा। कविता मुस्कुराते हुए बोली। क्या बुआ जी ,,,, आप भी। समझाते हुए बोली। ऐसा कुछ नहीं होता। आप सभी की दुआएं मेरे साथ है। मैं इज्जत की मौत मरूंगी। स्वर्ग नरक को किसने देखा है ?? किसी ने नहीं ! जिंदा व्यक्ति स्वर्ग जा नहीं सकता ! और मरा हुआ व्यक्ति स्वर्ग से आकर कुछ बता नहीं सकता। फिर मैं कैसे मान लूं। कि कोई स्वर्ग - नरक भी है। जो लोग गोदना गुदवाते हैं। या तो वो सुन्दर दिखने के लिए गुदवाते हैं। या स्वर्ग नरक के डर से। न तो मुझे सुन्दर दिखने का शौक है। न ही मुझे स्वर्ग नरक का डर है। फिर मैं गोदना क्यों गुदवाऊं ? मैं इन सब चीजों पर विश्वास नहीं करती। जो भी है इसी धरती पर है। ऊपर तो सिर्फ सूर्य, चंद्रमा, तारे और विभिन्न ग्रह मात्र हैं। आपको किसने कह दिया। कि गोदना गुदवाने से जीव को स्वर्ग मिलता है ? मां के मुंह से सुनना था। बुआ ने उत्तर दिया। और मां को किसने बताया था ? कविता ने फिर से मुस्कुराते हुए बुआ से सवाल पूछा। बुआ ने उत्तर दिया मां को एक बहुत बड़े पंडित ने बताया था। कि शास्त्रों में ऐसा लिखा है। शास्त्र तो स्वयं भगवान ने लिखा है बोलकर। कविता ने फिर मुस्कुराते हुए कहां। मां ने शास्त्र उठाकर खुद पढ़कर देखा या नहीं ? बुआ बोली। उस समय कहां बेटी,,,, सिर्फ पंडित लोग ही पढ़ें लिखे थे। बाकी सब तो अनपढ़ ही थे। अभी - अभी तो लोग इतना पढ़ लिख रहे हैं। कविता ने हंसकर कहा। इस बार अगर कोई पंडित ऐसा बोले गोदना वाली बात। तो सीधा मेरे पास भेजिये। अब विज्ञान इतनी तरक्की कर चुका है। कि हम स्वयं अंतरिक्ष यान से ऊपर जाकर देख सकते हैं। कि ऊपर क्या है और क्या नहीं। मैं देख परख कर पूरी तसल्ली करने के बाद ही गोदना गुदवाऊंगी बुआ जी। अगर मेरा मन हुआ तो। इतना बोलकर कविता हंसते हुए अंदर चली गई। कविता भीतर से कटोरी भर सब्जी लाई और बुआ को दे दिया। बुआ सब्जी लेकर अपने घर चली गई। कविता को उस पंडित के आने का इंतजार था। जिसने बुआ की मां से यह बात कही थी। सालों साल बीत गए। लेकिन न कोई पंडित उसके दरवाजे पर आया न कविता का इंतजार खत्म हुआ।

डॉ. क्षमा पाटले 'अनंत'
अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकार एवं समाज सेवी, छत्तीसगढ़

रूसी, प्यास, रूखापन Dandruff

कारण

बालों में डैंड्रफ और खुश्की होने की समस्या के कारणों में से सिर की स्किन में डेड कोशिकाएं मुख्य है। स्किन का ऑयली होना या रूखे होने के कारण भी ये समस्या आपको परेशान कर सकती है।

तनाव का अधिक होना

फंगल इन्फेक्शन का होना

बालों में अधिक पसीने के कारण

बालों को आवश्यक पोषक तत्वों का ना मिलना

बालों की सफाई (हेयर केयर) का ध्यान न रखने से।

हारमोंस इम्बेलेंस के कारण भी ये समस्या हो सकती है।

डैंड्रफ हटाने के लिए बालों को अच्छे से धोये और इसकी सफाई का विशेष ध्यान रखे। बालों में रुसी/सिकरी की समस्या होने पर सिर की त्वचा की देखभाल अच्छे से करे और किसी नुकीली चीज से सिर में खारिश न करे ऐसा करने से सिर में घाव बन सकते है।

दो चम्मच बेकिंग सोडा लें और इसमें दो चम्मच पानी मिलाकर सिर में लगाकर पन्द्रह मिनट की लिए छोड़ दे फिर सिर को अच्छे से धो ले। ये उपाय रुसी दूर करने में बहुत फायदेमंद है।

पानी व सिरके को बराबर-बराबर मात्रा में मिलाये और बालों में लगाये। ऐसा करने से भी हेयर डैंड्रफ हटाने में मदद मिलती है।

नीम के पत्ते लेकर उन्हें अच्छी तरह से पिस ले और उनका लेप बनाये। इसके बाद इस लेप को सिर पर सूखे बालों में प्रयोग करे और कुछ देर बाद सिर को धोये।

दही का प्रयोग रूसी से छुटकारा पाने में रामबाण इलाज है। दही को अच्छे से पूरे सिर पर लगाये और लगभग एक घंटे बाद सिर को धोये।

चार-पांच चम्मच नारियल का तेल ले और इसमें एक चम्मच निम्बू का रस मिला ले फिर इसे सिर पर लगाये। ऐसा करने से रुसी और खुश्की की परेशानी दूर होती है।

तुलसी और आंवले का पाउडर ले और इसे मिला ले फिर अच्छे तरीके से बालों की जड़ों पर लगाये और आधे घंटे बाद सिर को धो ले।

मेथी के दाने ले, उन्हें रात में पानी में डुबोकर छोड़ दे और सुबह उन्हें अच्छे से पिस ले और उनका लेप बनाकर सिर में स्किन पर अच्छे से लगाये फिर तीस मिनट के बाद सिर को अच्छे से धो ले। ऐसा करने से बालों में से रुसी तो खत्म होती ही है और इसके इलावा बालों की अन्य समस्याओं से भी आराम मिलता है।

दो चम्मच जैतून का तेल और चार चम्मच दही को दो चम्मच मूँग की दाल के पाउडर में अच्छे से मिलाये और इसका एक लेप बनाये इसके बाद इस लेप को बालों में दस-पन्द्रह मिनट तक लगाये और फिर बालों को साफ़ पानी से अच्छे से धोये।

मुल्तानी मिटटी के प्रयोग से भी रूसी और खुश्की को खत्म कर सकते है। मुल्तानी मिट्टी को पानी में अच्छे से पीसकर लेप बना ले फिर इसमें थोड़ी मात्रा में निम्बू के रस को भी मिला दे फिर इसके बाद इस लेप को पन्द्रह से बीस मिनट तक बालों पर लगाने के बाद सिर को धोये। इस उपाय को दो से तीन बार प्रयोग करने से रूसी की समस्या के साथ साथ सिर में खुश्की की परेशानी से भी छुटकारा मिलता है।

एलोवेरा जेल से बालों में अच्छे तरीके से मसाज करने से भी बालों की बहुत सी परेशानियों से राहत मिलती है।

सरसों के तेल से रात को सोते वक्त अच्छे से मालिश करे और फिर सुबह बालों को अच्छे से धो ले।

पानी का अधिक सेवन करे।

बालों पर ज्यादा तरह के ब्यूटी प्रोडक्ट्स का प्रयोग करने से बचे।

बालो में से रूसी दूर करने के उपाय करने हो या फिर खुश्की और रुसी से बचना हो आपको अगर शैम्पू का प्रयोग करना है तो केवल आयुर्वेदिक/हर्बल या नेचुरल शैम्पू का ही प्रयोग करे।(जैसे पतंजलि के)

बालों की समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए बालों पर विशेष ध्यान देने की जरुरत होती है। ऐसा करने से बाल स्वस्थ तो रहेंगे ही साथ साथ सुन्दरऔर मजबूत बनेंगे। इसलिए हमे ऐसा भोजन खाना चाहिए जो बालों में पोषक तत्वों की पूर्ति कर दे।

बालों में खुश्की और रुसी किसी को भी किसी भी उम्र में हो सकती है, इस समस्या के होने की कोई विशेष उम्र नहीं है।

इन नुस्खों को अगर सही तरीके से अपनाये तो आप बालो में डैंड्रफ, बाल गिरने और टूटने की समस्या से छुटकारा पा सकते है

आरोग्य ज्ञान विकास

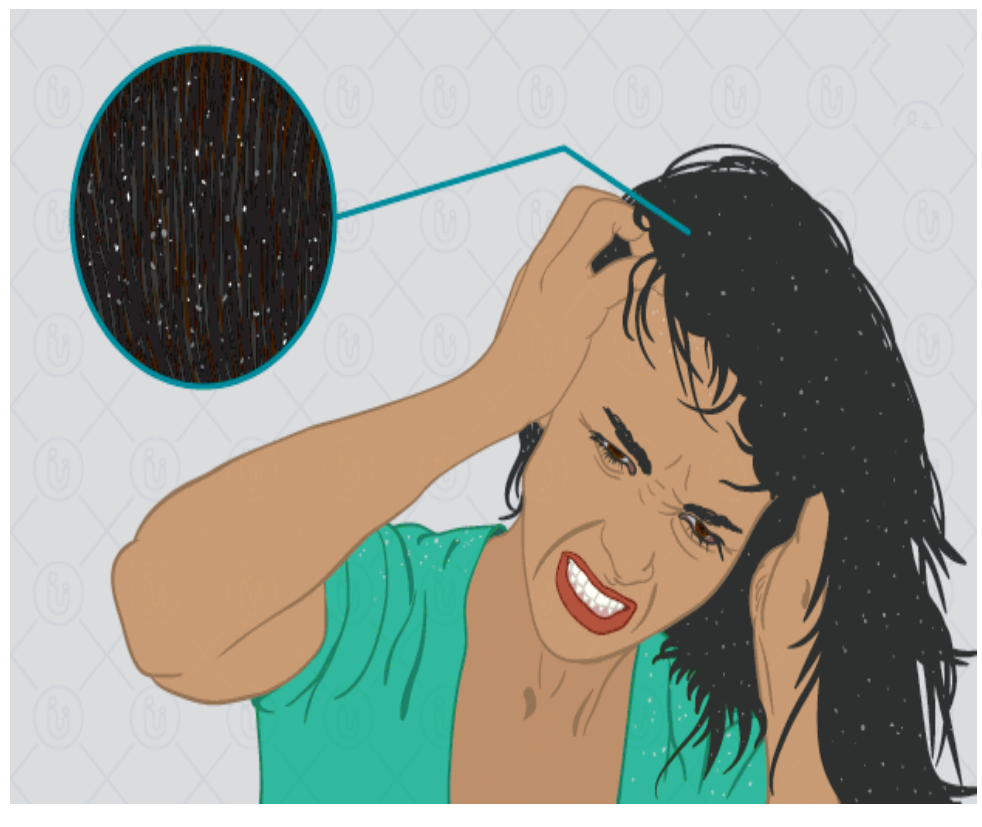

दिल्ली में कोरोना का कहर जारी, एक दिन में सामने आए 61 नए मामले

दिल्ली में कोरोना का प्रकोप जारी है। पिछले 24 घंटे में 61 नए मामले सामने आए हैं और 91 मरीज ठीक हुए हैं। वर्तमान में 436 सक्रिय मामले हैं। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने कहा है कि मरीजों में सामान्य खांसी और बुखार के लक्षण हैं। ओमीक्रॉन के जेएन. वन वैरिएंट के स्वरूप में बदलाव के कारण संक्रमण देखने को मिल रहा है।

नई दिल्ली। दिल्ली में 24 घंटे में कोरोना के 61 नए मामले सामने आए, 91 मरीज ठीक हुए। अब तक कुल 357 मरीज ठीक हो चुके हैं, एक्टिव मरीजों की संख्या 436 हो गई है।

हाल ही में दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने कहा कि सभी मरीजों में सामान्य खांसी और बुखार के लक्षण हैं। नया वैरिएंट वायरल संक्रमण के रूप में सामने आया है।

मौजूदा स्थिति से लग रहा है कि यह धीरे-धीरे कम हो जाएगा। एहतियात के तौर पर अस्पतालों को दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। स्थिति पर नजर रखी जा रही है।

दिल्ली स्थिति से निपटने के लिए तैयार है। बताया जा रहा है कि ओमीक्रॉन के जेएन. वन वैरिएंट के स्वरूप में थोड़ा बदलाव आया है। इसकी वजह से जेएन. वन वैरिएंट सब-वैरिएंट की वजह से संक्रमण देखने को मिल रहा है।

ओमिक्रॉन और इसके जेएन. वन वैरिएंट का संक्रमण पहले भी हो चुका है। उस समय भी ज्यादातर मरीजों में हल्के लक्षण देखने को मिले थे।

सुंदर नगरी सिलेंडर ब्लास्ट मामले में 2 बच्चों की मौत, परिवार में पसरा मातम

सुंदर नगरी में सीएनजी सिलेंडर फटने से दो बच्चों की मौत हो गई। 31 मई को एक गोदाम में हुए इस हादसे में तीन बच्चे झुलस गए थे जिनमें से साकिब और अब्बास ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। धमाका इतना तेज था कि लोगों को लगा जैसे बम फटा हो। बच्चों की मां शबाना ईद के लिए कपड़े खरीदने वाली थीं लेकिन हादसे ने सब कुछ बदल दिया।

दिल्ली। सीएनजी गैस सिलेंडर फटने से झुलसे बच्चे साकिब और अब्बास की इलाज के दौरान मौत हो गई। सुंदर नगरी के एक गोदाम में शनिवार (31 मई) को सिलेंडर फट गया, इस विस्फोट में तीन बच्चों समेत चार लोग बुरी तरह झुलस गए।

हादसे में का शिकार हुए तीनों बच्चे सगे भाई हैं। हादसे के समय बच्चे गली में खेल रहे थे। झुलझे हुए चारों को जीटीबी अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां दो बच्चों ने दम तोड़ दिया। जानकारी के मुताबिक, ये धमाका शाम करीब 4:10 बजे हुआ। धमाके की आवाज इतनी तेज थी

कि लोगों को लगा जैसे बम फट गया हो। हादसा कैसे हुआ इसकी सभी स्तरों पर जांच चल रही है।

बच्चों के लिए शनि बाजार से ईद के लिए कपड़े खरीदने जाने वाली थी शबाना

जीटीबी अस्पताल की इमरजेंसी...। तीनों बच्चों की मां शबाना की आंखों से आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। साथ में बैठी महिलाएं उन्हें ढांढस बंधा रही थी कि उनके बच्चे जल्दी ठीक हो जाएंगे। रोते हुए शबाना उनसे कह रही थीं कि मेरे बच्चों को बचा लो।

ईद के लिए मैं शाम को शनि बाजार से बच्चों के लिए नए कपड़े लेने जाने वाली थी। ये क्या हो गया। शबाना ने बताया कि वह बच्चों की पढ़ाई के लिए अनूपशहर से पति के साथ यहां आई थीं। उनके बच्चे ओ-ब्लाक में निगम स्कूल में पढ़ने जाते हैं। उनके घर के सामने ही उनका मायका है।

उन्होंने बताया कि ईद के लिए बच्चों के कपड़े खरीदने थे। सोचा था कि बच्चे खेल कर ऊपर आ जाएंगे तो उनको लेकर शनि बाजार जाऊंगी। ऐसा कर पाती उससे पहले हादसा हो गया। उन्होंने बताया कि जब धमाका होने पर घर से बाहर निकल कर देख तो उनके बच्चे घायल सड़क पर पड़े थे और तन पर कपड़े नहीं थे। कपड़ जल गए थे।

जिसकी लापरवाही से हादसा हुआ है, उनको कड़ी सजा मिलनी चाहिए। प्रशासन को भी सजग होना चाहिए और अवैध गतिविधियों को रोकना चाहिए।

- नईम, बच्चों के नाना

विश्व पर्यावरण दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन

पर्यावरण भारतीय संस्कृति में ही निहित है : प्रो. बालराम पाणि

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में एक विचार संगोष्ठी का आयोजन भारत विकास परिषद् की पर्यावरण गतिविधि द्वारा राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुरेश जैन के मार्गदर्शन में केंद्रीय कार्यालय, पीतमपुरा में संपन्न हुई । सुरेश जैन जी ने सभी अतिथियों का स्वागत पर्यावरण स्मृति संकल्प प्रतीक तुलसी का पौधा देकर किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन ऑफ कॉलेज प्रो. बलराम पाणी ने अपने वक्तव्य में पर्यावरण को भारतीय संस्कृति में निहित बताते हुए समझाया कि "भगवान" शब्द के प्रत्येक अक्षर में पृथ्वी, गगन, वायु, अग्नि और नीर समाहित हैं। उन्होंने कहा कि हमें प्रदूषण को रोकने की अति आवश्यकता है। उन्होंने बरगद, पीपल आदि स्वदेशी वृक्षों और पौधों के महत्व को रेखांकित किया।अंत में उन्होंने कहा कि ₹हम सभी खाली हाथ आए थे, पर जाते समय दो पेड़ लेकर जाएंगे। इसलिए हमें अवश्य ही पौधे लगाने चाहिए, ताकि धरती का ऋण कुछ हद तक चुका सकें।

कार्यक्रम में पर्यावरण गतिविधियों के राष्ट्रीय संयोजक डॉ जे. आर. भट्ट ने विषय प्रवर्तन करते सिंगल यूज प्लास्टिक से होने वाले पर्यावरणीय नुकसान पर प्रकाश डालते हुए इससे मुक्ति के लिए जन-जागरूकता की आवश्यकता पर बल दिया साथ ही उन्होंने "वसुधैव कुटुंबकम्" के सिद्धांत को केंद्र में रखते हुए प्रकृति और समस्त जीवों के प्रति करुणा का संदेश दिया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन ऑफ प्लानिंग प्रो. निरंजन कुमार ने अपने व्यक्तव्य में भारतीय व पाश्चात्य दृष्टिकोणों की तुलनात्मक व्याख्या की। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्रकृति पूज्य रही है । जबकि पश्चिमी सभ्यता में उपभोग की प्रवृत्ति प्रमुख रही है। उन्होंने दैनिक जीवन में जल व ऊर्जा संरक्षण के सरल लेकिन प्रभावी उपायों जैसे एयर कंडीशनर का तापमान 27°C पर रखने, पानी का अपव्यय रोकने जैसे सामान्य मगर सबसे उपयोगी आदतों को प्रतिदिन के व्यवहार में शामिल करने पर बल दिया।

कार्यक्रम में भारत विकास परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री गजेन्द्र सिंह; क्षेत्रीय महासचिव श्री राकेश शर्मा और दिल्ली विश्वविद्यालय एवं अन्य महाविद्यालयों के प्राध्यापकों के अलावा दिल्ली-एनसीआर के विभिन्न क्षेत्रों से आए 200 से अधिक पर्यावरण प्रेमियों एवं कार्यकर्ताओं ने सहभागिता की।

पर्यावरण केंद्रित यह संगोष्ठी न केवल ज्ञानवर्धक रही, अपितु इसने उपस्थित लोगों में पर्यावरण संरक्षण हेतु नई चेतना का संचार किया ।

दिल्ली के जंगपुरा में जमकर गरजा बुलडोजर, मद्रासी कैंप में तोड़ी जा रही 300 से ज्यादा झुग्गियां

दिल्ली के जंगपुरा स्थित मद्रासी कैंप में अवैध अतिक्रमण के खिलाफ बुलडोजर कार्रवाई की जा रही है। स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) द्वारा निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के पास 300 से अधिक झुग्गियों को तोड़ा जा रहा है। विरोध को नियंत्रित करने के लिए पुलिस बल तैनात है। यह कार्रवाई 17 मई को जारी नोटिस के बाद की जा रही है।

दिल्ली। राजधानी दिल्ली में अवैध अतिक्रमण के खिलाफ एक्शन तेज कर दिया गया है। ताजा मामले में जंगपुरा में मद्रासी कैंप पर रविवार को बुलडोजर चलाया जा रहा है। यहां 300 से ज्यादा झुग्गियां तोड़ी जा रही हैं।

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के पास जंगपुरा के मद्रासी कैंप पर रविवार को स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने ध्वस्तीकरण की कार्रवाई शुरू की।

17 मई को चस्पा किए थे नोटिस

जानकारी के मुताबिक, स्पेशल टास्क फोर्स की टीम चार बुलडोजर लेकर मौके पर अवैध अतिक्रमण हटा रही है। लोगों के विरोध से निपटने के लिए पुलिस और अर्द्धसैनिक बल लगाए गए हैं।

कार्रवाई के तहत लगभग 300 झुग्गियां हटाई जानी हैं, जिसे लेकर 17 मई को नोटिस चस्पा किए गए थे।

राजीव कैंप में झुके मकान की दूसरी मंजिल तोड़ी

उधर, पूर्वी दिल्ली के झिलमिल वार्ड के कृष्णा मार्केट राजीव कैंप में झुके मकान की दूसरी मंजिल शनिवार को तोड़ दी गई। इसी तीसरी मंजिल बीते दिन ध्वस्त की गई थी। नगर निगम के अधिकारियों ने बताया कि पहली मंजिल और भूतल अब मकान मालिक स्वयं तोड़ेगा।

अब इसे तोड़ने में किसी तरह का खतरा नहीं है, लेकिन इस मकान के झुकने की वजह से मकान मालिक और उसके आसपास के दो मकानों के लोग अभी अपने जानकारों के यहां रह रहे हैं।

राजीव कैंप में झुका मकान 15 गज में तीन मंजिल बना था। दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड (डूसिब) की जमीन पर झुग्गी की जगह इसे अवैध रूप से बनाया गया था। इस क्षेत्र में कई अन्य मकान खतरनाक स्थिति में कई मंजिला बने हुए हैं। निगम अधिकारियों का कहना है कि ऐसे मकानों पर डूसिब को कार्रवाई करनी चाहिए, क्योंकि यह उनकी जमीन है।

बारापूला मद्रासी कैम्प हटाने के आदेश करवाने वाले आम आदमी पार्टी नेता आज झुग्गी क्लस्टर वालों को भड़काने में लगे हैं : "वीरेन्द्र सचदेवा"

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की बारापूला मद्रासी कैम्प से नरेला फ्लैट्स में शिफ्ट किये गये झुग्गी वालों का मामला कोई सामान्यता प्रशासन द्वारा झुग्गी बस्ती हटाए जाने का मामला नही है बल्कि दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश पर नाले के ऊपर बसाई गई झुग्गी बस्ती को हटाए जाने का मामला है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा की भाजपा अपने जहां झुग्गी वहां मकान की नीति पर आज भी टिकी है पर आज बारापूला नाले पर बसी जिस मद्रासी बस्ती की झुग्गियों को शिफ्ट किया गया है उनके कारण बारापूला नाले की सफाई वर्षों से नही हो पा रही थी और यही गत वर्षों मानसून में आस पास के कई किलोमीटर क्षेत्र में जलजमाव का बड़ा कारण बना।

बारापूला मद्रासी बस्ती को हटाने के आदेश लोक निर्माण विभाग ने आम आदमी पार्टी के शासन के दौरान ही कर दिये थे और वहां के निवासी आदेश के खिलाफ न्यायालय गये पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने उनके मामले को नकारते हुए बारापूला नाले की सफाई को आवश्यक मानते हुए इन झुग्गियों को तोड़ने के लिए आज 1 जून के आदेश दिए।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है खेदपूर्ण है अपने शासन में लोक निर्माण विभाग से बारापूला मद्रासी कैम्प हटाने के आदेश करवाने वाले आम आदमी पार्टी नेता आज झुग्गी क्लस्टर वालों को भड़काने में लगे हैं।

यह भाजपा सरकार की संवेदनशील मानवीय नीति है की दिल्ली उच्च न्यायालय ने आज 1 जून को बारापूला मद्रासी कैम्प हटाने के आदेश किये पर हमारी सरकार ने हटाने की बजाये उन्हे वैकल्पिक फ्लैट्स देकर बेहतर जीवन दिया है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की बेहतर होता की थोथी ब्यानबाज़ी करने की बजाय ₹आपर नेता बतायें की आखिर क्यों उनकी सरकार ने हमेशा झुग्गी वालों को विधानसभा वार वोट बैंक मानते हुए एक भी झुग्गी बस्ती वालों को बेहतर पुनर्वास नही दिया ?

शिखा बन्धन (चोटी) रखने का महत्त्व

शिखा का महत्त्व विदेशी जान गए हिन्दू भूल गए ।हिन्दू धर्म का छोटे से छोटा सिध्दांत,छोटी-से-छोटी बात भी अपनी जगह पूर्ण और कल्याणकारी हैं। छोटी सी शिखा अर्थात चोटी भी कल्याण, विकास का साधन बनकर अपनी पूर्णता व आवश्यकता को दर्शाती हैं। शिखा का त्याग करना मानो अपने कल्याणका त्याग करना हैं। जैसे घडी के छोटे पुर्जे कीजगह बडा पुर्जा काम नहीं कर सकता क्योंकि भले वह छोटा हैं परन्तु उसकी अपनी महत्ता है।

शिखा न रखने से हम जिस लाभ से वंचित रह जाते हैं, उसकी पूर्ति अन्य किसी साधन से नहीं हो सकती।

'हरिवंश पुराण' में एक कथा आती है हैहय व तालजंघ वंश के राजाओं ने शक, यवन, काम्बोज पारद आदि राजाओं को साथ लेकर राजा बाहू का राज्य छीन लिया। राजा बाहु अपनी पत्नी के साथ वन में चला गया। वहाँ राजा की मृत्यु हो गयी। महर्षिऔर्व ने उसकी गर्भवती पत्नी की रक्षा की और उसे अपने आश्रम में ले आये। वहाँ उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जो आगे चलकर राजा सगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। राजासगर ने महर्षि और्व से शस्त्र और शास्त्र विद्या सीखीं। समय पाकर राजा सगरने हैहयों को मार डाला और फिर शक, यवन, काम्बोज, पारद, आदि राजाओं को भी मारने का निश्चय किया। ये शक, यवन आदि राजा महर्षि वसिष्ठ की शरण में चले गये। महर्षि वसिष्ठ ने उन्हें कुछ शर्तों पर उन्हें अभयदान दे दिया। और सगर को आज्ञा दी कि वे उनको न मारे। राजा सगर अपनी प्रतिज्ञा भी नहीं छोड सकते थे और महर्षि वसिष्ठ जी की आज्ञा भी नहीं टाल सकते थे। अतः उन्होंने उन राजाओं का सिर शिखा सहित मुँडवाकर उनको छोड दिया।

प्राचीन काल में किसीकी शिखा काट देना मृत्युदण्ड के समान माना जाता था। बडे दुख की बात हैं कि आज हिन्दु लोग अपने हाथों से अपनी शिखा काट रहे है। यह गुलामी की पहचान हैं।

शिखा हिन्दुत्व की पहचान हैं। यह आपके धर्म और संस्कृतिकी रक्षक हैं। शिखा के विशेष महत्व के कारण ही हिन्दुओं ने यवन शासन के दौरान अपनी शिखा की रक्षा के लिए सिर कटवा दिये पर शिखा नहीं कटवायी।

*डा॰ हाय्वमन कहते है ''मैने कई वर्ष भारत में रहकर भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया हैं, यहाँ के निवासी बहुत काल से चोटी रखते हैं , जिसका वर्णन वेदों में भी मिलता हैं। दक्षिण भारत में तो आधे सिर पर 'गोखुर' के समान चोटी रखते हैं । उनकी बुध्दि की विलक्षणता देखकर मैं अत्यंत प्रभावित हुआ हुँ। अवश्य ही बौध्दिक विकास में चोटी बड़ी सहायता देती हैं। सिर पर चोटी रखना बढा लाभदायक हैं। मेरा तो हिन्दु धर्म में अगाध विश्वास हैं और मैं चोटी रखने का कायल हो गया हूँ। *

प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा॰ आई॰ ई क्लार्क एम॰ डी ने कहा हैं ₹मैंने जबसे इस विज्ञान की खोज की हैं तब से मुझे विश्वास हो गया हैं कि हिन्दुओं का हर एक नियम विज्ञान से परिपूर्ण हैं। चोटी रखना हिन्दू धर्म ही नहीं, सुषुम्ना के केद्रों की रक्षा के लिये ऋषि-मुनियों की खोज का विलक्षण चमत्कार हैं।

इसी प्रकार पाश्चात्य विद्वान मि॰ अर्ल थामस लिखते हैं की ₹सुषुम्ना की रक्षा हिन्दु लोग चोटी रखकर करते हैं जबकि

अन्य देशों में लोग सिर पर लम्बे बाल रखकर या हैट पहनकर करते हैं। इन सब में चोटी रखना सबसे लाभकारी हैं। किसी भी प्रकार से सुषुम्ना की रक्षा करना जरुरी हैं।

वास्तव में मानव-शरीर को प्रकृति ने इतना सबल बनाया हैं की वह बड़े से बड़े आघात को भी सहन करके रह जाता हैं परन्तु शरीर में कुछ ऐसे भी स्थान हैं जिन पर आघात होने से मनुष्य की तत्काल मृत्यु हो सकती हैं। इन्हें मर्म-स्थान कहाजाता हैं।

शिखा के अधोभाग में भी मर्म-स्थान होता हैं, जिसके लिये सुश्रुताचार्य ने लिखा है

मस्तकाभ्यन्तरोपरिष्टातशिरासन्धि सन्निपातो।

रोमावर्तोऽधिपतिस्तत्रपि सद्यो मरणम्।

अर्थात मस्तक के भीतर ऊपर जहाँ बालों का आवर्त(भँवर) होता हैं, वहाँ संपूर्ण नाडियों व संधियों का मेल हैं, उसे 'अधिपतिमर्म' कहा जाता हैं।यहाँ चोट लगने से तत्काल मृत्यु हो जाती हैं(सुश्रुत संहिता शारीरस्थानम्ः६.२८)

सुषुम्ना के मूल स्थान को 'मस्तुलिंग' कहते हैं। मस्तिष्क के साथ ज्ञानेन्द्रियों कान, नाक, जीभ, आँख आदि का संबंध हैं और कामेन्द्रियों - हाथ, पैर, गुदा, इन्द्रिय आदि का संबंध मस्तुलिंग से हैं मस्तिष्क व मस्तुलिंग जितने सामर्थ्यवान होते हैं उतनी ही ज्ञानेन्द्रियों और कामेन्द्रियों - की शक्ति बढती हैं। मस्तिष्क ठंडक चाहता हैं और मस्तुलिंग गर्मी मस्तिष्क को ठंडक पहुँचाने के लिये क्षौर कर्म करवाना और मस्तुलिंग को गर्मी पहुँचाने के लिये गोखुरके परिमाण के बाल रखना आवश्यक होता है।

बालकुचालक हैं, अतः चोटी के लम्बे बाल बाहर की अनावश्यक गर्मी या ठंडक से मस्तुलिंग की रक्षा करते हैं।

शिखा रखने के अन्य निम्न लाभ बताये गये हैं।

१ शिखा रखने तथा इसके नियमों का यथावत्पालन करने से सद्बुद्धि , सद्विचारादि की प्राप्ति होती हैं।

२ आत्मशक्ति प्रबल बनती हैं।

3 मनुष्य धार्मिक , सात्विक व संयमी बना रहता हैं।

४ लौकिक - पारलौकिक कार्यों मे सफलता मिलती हैं।

५सभी देवी देवता मनुष्य की रक्षा करते हैं।

६ सुषुम्ना रक्षा से मनुष्य स्वस्थ, बलिष्ठ, तेजस्वी और दीर्घायु होता हैं।

७ नेत्र्ज्योति सुरक्षित रहती हैं।

इस प्रकार धार्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक सभी दृष्टियों से शिखा की महत्ता स्पष्ट होती हैं। परंतु आज हिन्दू लोग पाश्चात्योंके चक्कर में पड़कर फैशनेबल दिखने की होड़ में शिखा नहीं रखते व अपने ही हाथों अपनी संस्कृति का त्याग कर डालते हैं।

लोग हँसी उड़ाये, पागल कहे तो सब सह लो पर धर्म का त्याग मत करो। मनुष्य मात्र का कल्याण चाहने वाली अपनी हिन्दू संस्कृति नष्ट हो रही हैं। हिन्दु स्वयं ही अपनी संस्कृति का नाश करेगा तो रक्षा कौन करेगा।

वेद में भी शिखा रखने का विधान कई स्थानों पर मिलता है,देखिये।

शिखिभ्यः स्वाहा (अथर्ववेद १९-२२-१५)

अर्थ चोटी धारण करने वालों का कल्याण हो।

यशसेश्रियै शिखा।-(यजु० १९-९२)

अर्थ यश और लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए सिर पर शिखा धारण करें।

याज्ञिकैंगौर्दाणि मार्जनि गोक्षुर्वच्च शिखा। (यजुर्वेदीय कठशाखा)

अर्थात सिर पर यज्ञाधिकार प्राप्त को गौ के खुर के बराबर(गाय के जन्में बछड़े के खुर के बराबर) स्थान में चोटी रखनी चाहिये।

केशानां शेष करणं शिखास्थापनं।

केश शेष करणम्-इति मंगल हेतोः ।।

बेटियां: विरासत नहीं, संवेदना का सच, "पितृसत्ता की विरासत में बेटियों की अनदेखी"

शलिपट के रोये हैं बेटियों से अपनी हालत पे, जो कहते थे विरासत के लिये बेटा जरूरी है..."यह शेर एक टीस है, एक कराह है उस व्यवस्था की, जिसने बेटियों को सिर्फ़ 'पराया धन' समझ कर हमेशा हाशिए पर रखा। आज जब समाज के कंधे झुकते हैं, आँखें नम होती हैं, तो वही बेटियाँ उस पीड़ा की ढाल बनती हैं। जिनको कभी यह कहकर पराया कर दिया गया कि 'बेटी तो पराई होती है', वही बेटी अपने पिता के अंतिम दिनों में हाथ थामे खड़ी होती है।

प्रियंका सौरभ

भारतीय समाज में सदियों से यह धारणा रही है कि बेटा ही वंश चलाता है, बेटा ही अर्थी को कंधा देगा, बेटा ही संपत्ति का उत्तराधिकारी होगा। यह सोच न सिर्फ बेटियों को दोयम दर्जे में धकेलती है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं को भी ठेस पहुंचाती है। पर समय ने बार-बार यह सिद्ध किया है कि वंश केवल नाम का नहीं होता, वंश वह संवेदना है जिसे कोई भी आगे बढ़ा सकता है। कितनी ही बेटियाँ हैं जो अपने बूढ़े माँ-बाप की सेवा करती हैं, उन्हें सहारा देती हैं और उनकी अंतिम इच्छा तक निभाती हैं।

आज जब संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं, जब बेटे महानगरों में अपने करियर में व्यस्त हैं, तब वहीं बेटियाँ अपने माँ-बाप के पास रहकर उन्हें मानसिक, भावनात्मक और कभी-कभी आर्थिक संबल भी दे रही हैं।

आँसुओं की तासीर एक-सी क्यों होती है?

जब किसी घर में दुख आता है, तो आँसू किसी रिश्ते, लिंग या वर्ग को नहीं देखते। माँ की ममता और बेटी का दुलार—दोनों में दर्द की वही भाषा होती है। मौत एक ऐसी सच्चाई है जो सबको एक छतरी के नीचे खड़ा कर देती है। उस क्षण न कोई बेटा बड़ा होता है न बेटी छोटी। उस क्षण सिर्फ़ इंसान होता है—समर्पित, भावुक, टूटता हुआ।

हमारे समाज में मृत्यु के बाद का अनुष्ठान बेटे के जिम्मे होता है। लेकिन क्या भावनात्मक जिम्मेदारी केवल एक लिंग पर थोपना उचित है? जब बेटी भी उसी दुख को झेलती है, वही आँसू बहाती है, तो वह अधिकारों में कमतर क्यों?

बदलते सामाजिक समीकरण

आज का भारत एक संक्रमण काल से गुजर रहा है, जहाँ बेटियों को पढ़ाया जा रहा है, आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है, पर मानसिकता का बदला जाना अभी अधूरा है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा तो है, पर क्या हम बेटियों को जीवन के हर अधिकार में समान दर्जा दे पा रहे हैं? क्या उन्हें संपत्ति, परंपरा और निर्णयों में बराबरी का स्थान मिल रहा है?

सिर्फ शिक्षा ही नहीं, बेटियों को संपत्ति के अधिकार, पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी और सामाजिक सम्मान की भी ज़रूरत है। यह बदलाव सिर्फ कानून से नहीं, बल्कि विचारों से आएगा।

अनुभवों की कहानियाँ: बेटियाँ जिन्होंने समाज को बदला

राजस्थान के छोटे गाँवों से लेकर महानगरों तक, हजारों बेटियाँ अपने माता-पिता के लिए वह संबल बनीं हैं जिसकी कल्पना समाज बेटों से करता था। एक उदाहरण महाराष्ट्र की प्रियंका का है, जिसने अपने पिता की मृत्यु पर विधिवत अंतिम संस्कार किया, गाँव ने विरोध किया, पर वह डटी रही। आज गाँव की अन्य लड़कियाँ उसे अपना आदर्श मानती हैं।

एक अन्य कहानी उत्तर प्रदेश की सीमा की है, जिसने अपने पिता के बीमार होने पर नौकरी छोड़ दी और तीन वर्षों तक दिन-रात सेवा की। अंत में जब पिता का देहांत हुआ, तो सीमा ने अकेले सारे कर्मकांड निभाए।

क्या यह प्रेम, यह समर्पण विरासत का हिस्सा नहीं है?

कानून क्या कहता है?

भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 2005 के संशोधन के बाद बेटियों को संपत्ति में बराबरी का अधिकार मिला है। पर सामाजिक स्तर पर यह अधिकार कितनी बार स्वीकारा गया है? अदालतें भले ही बेटियों को बराबरी दें, पर समाज अब भी मानसिक तौर पर इस बदलाव को पूरी तरह आत्मसात नहीं कर पाया है। कई बार बेटियों को स्वेच्छा से 'हक छोड़ने' के लिए मजबूर किया जाता है ताकि बेटों का हिस्सा बना रहे। यह 'त्याग' नहीं, एक सुनियोजित सामाजिक दबाव है।

बेटियों को कमजोर क्यों समझा जाता है?

संवेदनशील होना कमजोरी नहीं होती। सहनशीलता को ही हमने दुर्बलता मान लिया है। बेटियाँ घर की शांति होती हैं, स्नेह का प्रवाह होती हैं और दुख की सबसे पहली साथी होती हैं। अगर यही गुण बेटे में हों, तो उन्हें 'समझदार' कहा जाता है, फिर बेटियों को 'कमज़ोर' क्यों?

बेटियाँ अक्सर परिवार की भावनात्मक रीढ़ होती हैं। वे संघर्षों को चुपचाप सहती हैं और फिर भी मुस्कुराती हैं। क्या यह शक्ति नहीं?

पीढ़ियों की सोच में बदलाव की ज़रूरत

बेटा ज़रूरी है—यह सोच एक सामाजिक भ्रम है। वंश वही चलता है जहाँ संस्कार होते हैं, और संस्कार बेटा या बेटी में नहीं, पालन-पोषण और संबंध में होते हैं। जो बेटी पिता की चिता को अग्नि दे, क्या वह उससे कम है जो पिता की तस्वीर पर माला चढ़ाता है?

नयी पीढ़ी को यह समझना होगा कि परिवार की जिम्मेदारियाँ केवल बेटों की नहीं होतीं। बेटियाँ भी माँ-बाप की बुढ़ापे की लाठी हो सकती हैं, अगर समाज उन्हें वह अवसर और अधिकार दे।

विरासत सिर्फ़ ज़मीन या नाम नहीं होती

विरासत वह भी होती है जो आँसुओं में झलकती है, जो संवेदनाओं में बहती है, जो संस्कारों में जीती है। बेटियाँ वह विरासत हैं जो सिर्फ़ खून का नहीं, प्रेम और सेवा का रिश्ता आगे बढ़ाती हैं। आजकल परिवारों में यह देखा गया है कि बेटियाँ अपने माँ-बाप के खर्च का बोझ भी उठाती हैं, उनकी बीमारी में दवा से लेकर देखभाल तक सब कुछ करती हैं।

एक बेटी जब अपने पिता को खाट पर देखती है, तो वह सिर्फ़ एक मरीज को नहीं, अपने जीवन के स्तंभ को गिरते हुए देखती है। उसका दर्द, उसकी सेवा किसी भी बेटे से कम नहीं होती।

मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति में बदलाव की जरूरत

हमारे टेलीविजन धारावाहिकों और फिल्मों में बेटियों को या तो बोझ के रूप में या फिर त्याग की देवी के रूप में दिखाया जाता है। यह चरम सीमाएँ हैं। हमें ज़रूरत है ऐसी कहानियों की जो बेटियों को वास्तविक, सशक्त और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करें। जब समाज का सांस्कृतिक प्रतिबिंब बदलता है, तब मानसिकता भी बदलती है।

हमारी जिम्मेदारी

समाज को चाहिए कि वह बेटियों को केवल एक विकल्प के रूप में न देखे, बल्कि उन्हें एक पूर्ण, सक्षम उत्तराधिकारी माने। बेटियों की शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान सिर्फ़ नारे नहीं, एक गहरी सामाजिक क्रांति की शुरुआत है। स्कूलों में समानता की शिक्षा हो, पंचायतों में बेटियों की भागीदारी हो, और घरों में उनके फैसलों को सम्मान मिले—तभी यह बदलाव स्थायी होगा।

बेटियों की परवरिश करते समय यह न सोचें कि "कल तो पराई हो जाएगी," बल्कि सोचें कि "यह मेरी आज की ताकत है।"

आज के दौर में जब परिवार, रिश्ते और मूल्यों की परिभाषाएं बदल रही हैं, तब बेटियों की भूमिका को एक बार फिर नए दृष्टिकोण से समझना जरूरी है। वे केवल सहारा नहीं, शक्ति हैं। वे सिर्फ़ संवेदना नहीं, उत्तराधिकार की हक़दार हैं।

बेटियाँ सिर्फ रिश्तों की गारंटी नहीं हैं, वे समाज की रीढ़ भी हैं। उनकी आँखों में अपने पिता के लिए वही चिंता, वही अपनापन, वही असीम प्रेम है जो किसी भी बेटे में होता है—बल्कि कई बार उससे कहीं अधिक। उन्हें हाशिए से उठाकर केंद्र में लाना, उन्हें सिर्फ़ 'बेटी' नहीं, 'वारिस' मानना ही सच्ची सामाजिक प्रगति होगी।

"समझाता हूँ बहुत, पर समझता ही नहीं,, अनपढ़ से मेरे दिल का....दिमाग़ नहीं है...!!"

जब दिल से सोचेंगे, तब ही समझ आएगा कि बेटियाँ नाजुक नहीं, नियति हैं।

डॉ गिरीश ने की आत्महत्या..पद, पैसा या प्रतिष्ठा पाने की दौड़ में रिश्तों को खोने से बचें

महाराष्ट्र में हज़ारों मरीज़ महीनों से इस डॉक्टर से ऑपरेशन के लिए इंतज़ार कर रहे थे...

सोलापुर के रत्न, प्रसिद्ध न्यूरोसर्जन डॉ. शिरीष वलसंगकर, जो संपत्ति, प्रतिष्ठा और बुद्धिमत्ता के प्रतीक थे, ने आज अपने सिर में गोली मारकर आत्महत्या करने का प्रयास किया। वह सोलापुर जिले में अपनी खुद की प्राइवेट चार्टर्ड प्लेन रखने वाले एकमात्र व्यक्ति थे। शुक्रवार की रात उन्होंने अपने परिवार के साथ भोजन किया और फिर अपने कमरे में चले गए। अस्पताल में जाने के बाद, डॉ. वलसंगकर ने अपने सिर में गोली मार ली। डॉक्टरों ने उन्हें बचाने की पूरी कोशिश की, लेकिन अंततः उन्होंने अपनी जान गंवा दी।

पद, पैसा और प्रतिष्ठा शांति देने के साधन नहीं हैं। डॉ. शिरीष वलसंगकर, सोलापुर, महाराष्ट्र में प्रैक्टिस करने वाले भारत के प्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट में से एक थे। उन्होंने न केवल सोलापुर में बल्कि पूरे भारत और दुनिया में अपनी चिकित्सा सेवाएं प्रदान कीं। वह अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ थे, लोग उनसे मिलने के लिए महीनों तक इंतज़ार करते थे। डॉ. वलसंगकर ने शिवाजी विश्वविद्यालय और रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियंस, लंदन से एमबीबीएस, एमडी और एमआरसीपी की डिग्री पूरी की थी। उनके बेटे डॉ. अश्विन और बहू डॉ. सोनाली दोनों न्यूरोलॉजिस्ट हैं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने उन्हें न्यूरोलॉजिकल सेवाओं में उनके योगदान के लिए बेस्ट न्यूरोलॉजिस्ट अवार्ड से सम्मानित किया था।

डॉ. शिरीष के पास बहुत संपत्ति थी, वह अपने निजी हेलीकॉप्टर से कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र के अन्य राज्यों में लोगों का इलाज करने जाते थे। वह शारीरिक रूप से स्वस्थ थे, उनकी संपत्ति थी, उनके बच्चे भी स्थापित थे, और समाज में उनकी बहुत प्रतिष्ठा थी। इसके बावजूद, डॉ. शिरीष वलसंगकर ने अपने बंगले में खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। उन्होंने उसी अस्पताल में दम तोड़ दिया जहां उन्होंने कई मरीजों का इलाज किया था।

दोस्तों, जीवन में पद, पैसा और प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे सब कुछ नहीं हैं। मेरी नजर मे अगर आन्तरिक सुकून व सन्तुष्टी नही है तथा आपके पास आपको दिल से चाहने वाले सच्चे मित्र नही है तो फिर आपके पास निजी हेलीकॉप्टर व सभी भौतिक सुख के होते हुए आत्महत्या करनी पड़े तो समझ लें कि सब कुछ होने के बावजूद आप दुनिया के सबसे गरीब व्यक्ति हैं।

देहात में खेलते समय रफ्तार ने ली दो मासूमों की जान : ट्रैक्टर ट्राली चालक गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। आज रविवार सुबह लगातार जारी रफ्तार के कहर ने खेलते समय दो मासूम की जान ले ली। घटना से उनके परिवार में कोहरा मचा हुआ है। वहीं पुलिस ने दोनों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजने के साथ फरार होने से पहले ट्रैक्टर चालक को भी गिरफ्तार कर लिया।

यह घटना कानपुर देहात में सट्टी थाना के गिरधरपुर ईंट भट्टा परिसर के पास हुई। इससे दोनों मासूम गंभीर रूप से घायल हो गए। परिजन उन्हें सीएचसी ले गए, जहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया।

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के अनुसार हमीरपुर के जलालपुर निवासी मूलचंद्र व जालौन के कदौरा निवासी माहेश्वरीदीन गिरधरपुर ईंट भट्टे पर ईंट पाथने का काम करते हैं। दोनों परिसर में ही झोपड़ी रखकर परिवार के साथ रहते हैं।

पुलिस के अनुसार रविवार सुबह आठ बजे के करीब माहेश्वरीदीन का बेटा राजदीप (1) व मूलचंद्र का बेटा कृष्णा (2) भट्टा परिसर में खेल रहे थे। तभी वहां से गुजर रहे ट्रैक्टर-ट्रॉली ने उनको कुचल दिया। हादसे में दोनों मासूम गंभीर रूप से घायल हो गए।

इसके बाद जानकारी पर परिजन दोनों बच्चों को सीएचसी पुखरायां ले आए। यहां डॉक्टर ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। इसकी सूचना पर पहुंची पुलिस ने फरार होने के पहले ही चालक को मय ट्रैक्टर के गिरफ्तार कर लिया।

झारखंड के दो देशी रियासत सीमा पर ऐतिहासिक गांव बाघरायडीह मे जंताल पूजा

12 वर्ष अवधि पर पूजा में पहुंचे विधायक दशरथ गगराई

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला: मौजूदा खरसावां प्रखंड अन्तर्गत ऐतिहासिक गांव बाघरायडीह (व्याघ्र वाहिनी को समर्पित) के जाहेर स्थल पर रविवार को राजकीय कृत्य जंनाल पूजा का आयोजन किया गया.जिसमे खरसावां के कर्मठ विधायक दशरथ गागराई शामिल हुए। इस अवसर पर समुचे सिंहभूम की इष्टदेवी मां पाउंडी को समर्पित क्षेत्र के सुख,शांति खुशहाली व समृद्धि के लिए पारंपरिक रीति रिवाज के अनुसार जांताल पूजा की गयी. ग्रामीणों ने बताया यह जांताल पूजा प्रत्येक 12 वर्षो में होती आई है. बागरायडीह में पूर्वजो द्वारा जांताल पूजा का आयोजन शदियों से किया जा रहा है. यहां बागरायडीह व आसपास के दर्जनों मौजा के लोग आकर पाउड़ी मां की पूजा-अर्चना करते आ रहे हैं. पारंपरिक रीति रिवाज के अनुसार हुई जांताल पूजा में विभिन्न मौजा के लोगों ने पूजा-अर्चना की एवं पाउड़ी मां से सुख-समृद्धि की कामना की. गांव के देउरी समरो सरदार ने जांताल पूजा कराया. जिसमे समस्त ग्रामवासी शामिल होकर क्षेत्र के सुख शांति समृद्धि की कामना की.

यह स्थल एक ऐसा जगह है जिसका निकट स्थित गांव का नाम मांगनी डीह था। उक्त गांव सरायकेला एवं खरसावां दो देशी ओड़िया रियासत का सीमांत गांव होने के कारण दोनों राजाओं के बीच कभी युद्ध भी हुआ था। बाद में मांगकर ली गयी बताये जाने के कारण राजकीय समय में नाम मांगनी डीह रहा। पर जैसे आजादी मिली गांव का नाम उत्कल के मूल देवता जगत के नाथ

जगन्नाथ जी पर जगन्नाथपुर रखा दिया गया। जो बागराई डीह(नाम व्याघ्र वाहिनी के नाम पर पड़ा) के समीप है। निकट प्रधान डीह भी सरायकेला सीमा-पर है यहां प्रधानों की प्रधानी रही। बिल्कुल उपेक्षित ओडिया भाषी गांव है ये आज भाषा ख़त्म के कामगार पर। आज न तो झारखंड सरकार नाही उनके अधिकारी इन ऐतिहासिक धार्मिक महत्व को जाते हैं। जिसे बिहार सरकार ने ओडिया संस्कृति खत्म करने हेतु 1948 के बाद षड्यंत्र पूर्वक जनता की नजरों से अझोल कर रखा है।

विश्व में कार्यपालिका और न्यायपालिका में सबसे अधिक शक्तिशाली कौन?पद बढ़ा या पद पर बैठने वाले की क्षमता,योग्यता व नैतिक साहस बढ़ा?

विश्व में कार्यपालिका और न्यायपालिका में सबसे अधिक शक्तिशाली कौन?पद बढ़ा या पद पर बैठने वाले की क्षमता,योग्यता व नैतिक साहस बढ़ा?

व्यावहारिक रूप से विश्व में शासन के तीनों अंगों विधायिका, कार्यपालिका एंव न्यायपालिका के अधिकारों व शक्तियों में संतुलन स्थापित है

विश्व में कोई भी पद शक्तिशाली नहीं होता,पद पर बैठने वाले की क्षमता,योग्यता व नैतिक साहस से किसी पद की शक्ति तय होती है,सटीक विचार-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर अक्सर हम लोकतंत्र के चार स्तंभों, विधायिका,कार्यपालिका न्यायपालिका व मीडिया के बारे में व उनके अधिकारों कर्तव्य जवाबदेही व कार्यक्षेत्रों के बारे में अक्सर सुनते पढ़ते रहते हैं स्वाभाविक रूप से चारों स्तंभों के अलग-अलग कार्यक्षेत्र अधिकार व कर्तव्य हैं, परंतु इनकी आपस में तुलना नहीं की जातीज़ा सकती,किसीको भी कम-अधिक नहीं आंका जा सकता, परंतु प्रैक्टिकली जब हम देखते हैं तो एक स्वाभाविक रूप से मन में प्रश्न खड़ा होता है कि, विशेष रूप से तीन स्तंभों विधायिका कार्यपालिका, न्यायपालिका में सबसे शक्तिशाली कौन है ?यह विचार मेरे मन में भी आया कि वास्तव में तीनों स्तंभों में शक्तिशाली कौन है, किस स्तंभ का सर्वोच्च पद तीनों स्तंभों में शक्तिशाली है? तो अति गहन अध्ययनकर मैंने अपने विचार रखे कि कोई भी ₹पद₹ शक्तिशाली नहीं होता परंतु उस पद पर बैठने वाले की क्षमता, योग्यता और नैतिक साहससे ही उस पद की शक्ति जाहिर होती है,ऐसा विचार किसी और ने भी रखा था जिससे मैं पूर्ण रूपसे सहमत हूं,हालांकि मेरे 45 वर्षों के लेखन कार्यकाल के अनुभव में तीनों स्तंभों के सर्वोच्च पद पर अनेकों व्यक्ति बैठे, परंतु अभी तक उनके निर्णयों डिसीजन्स का हम विश्लेषण कर अंदाज लगा सकते हैं कि पद महत्वपूर्ण है,या उनपर बैठने वाले व्यक्ति की क्षमता, योग्यता और नैतिक साहस, जिसकी चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे। आज इस विषय पर हम इसलिए चर्चा कर रहे हैं क्योंकि जिस तरह भारतीय पीएम के पिछले कार्यकाल के डिसीजन्स मेकिंग विशेष रूप से 370,तीन तलाक, सर्जिकल स्ट्राइक, ऑपरेशन सिंदूर जीएसटी सहित अनेकों निर्णय व अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति जिन्होंने पदभार ग्रहण करते ही अमेरिकी फर्स्ट, टैरिफ केस,नागरिकता केस, पनामा नहर,यूक्रेन रूस युद्ध समाप्ति पहल, हमास इजरायल युद्ध समाप्ति पहल सीरिया पर लगे प्रतिबन्ध हटाना व अभी टैरिफ पर फेडरल कोर्ट द्वारा लगाई गई रोग को, अपीलीय कोर्ट द्वारा खारिज कर टैरिफ को बहाल करने जैसे अनेकों मुद्दे हैं, जो इन दोनों व्यक्तित्वों की योग्यता क्षमता नैतिक साहस को दर्शाता है। भारत के प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति बीआर गवई ने शनिवार (31 मई, 2025) को इलाहाबाद में नवनिर्मित अधिवक्ता चैंबर भवन और मल्टी लेवल पार्किंग का उद्घाटन कार्यक्रम में कहा भारतीय संविधान लागू होने की 75 साल की यात्रा में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका ने सामाजिक और आर्थिक समानता लाने में बड़ा योगदान दिया है।चूँकि हालाँकि, व्यावहारिक रूप से विश्व में शासन के तीनों अंगों यथा विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका के अधिकारों व शक्तियों में संतुलन स्थापित है,परंतु आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, विश्व में कार्यपालिका और न्यायपालिका में सबसे अधिक शक्तिशाली कौन₹पद₹ बढ़ा या पद पर बैठने वाले की ₹क्षमता निर्णय क्षमता योग्यता व नैतिक साहस बढ़ा ?₹

साथियों बात अगर हम कार्यपालिका व न्यायपालिका की करें तो,भारत में कार्यपालिका अधिक शक्तिशाली है। कार्यपालिका नियम और कानून बनाती है और न्यायपालिका उन कानूनों के पालन कराने में सहयोग करती है। न्यायपालिका अपने स्तरपर कानून नहीं बना सकती। कार्यपालिका न्यायपालिका के आदेशों की पालना करना आवश्यक नहीं समझती, क्योंकि वह संबंधित कानून को बदलने का अधिकार रखती है।शाहबानो के मामले में सुप्रीम कोर्ट के आदेश को सरकार ने नहीं माना। कांग्रेस सरकार ने संविधान संशोधन लाकर कानून ही बदल दिया। ठीक उसी तरह दिल्ली केस में भी सुप्रीम कोर्ट के आदेश को एक नया विधेयक लाकर पलट दिया गया। 2 साल पहले सुप्रीम कोर्ट ने एससी एसटी वर्ग के कर्मचारियों को कार्यस्थल पर पीड़ित करने के मामले में एक आदेश पारित किया था। उसमें कहा गया था कि बिना जांच किए अन्य वर्ग से संबंधित व्यक्ति पर केस दर्ज नहीं किया जाना चाहिए। इसके लिए सरकार को कानून बनाने के लिए आदेश दिया। लोकसभा में उस आदेश की पालना में कानून बनाया गया, लेकिन भारी विरोध के कारण सरकार को उस कानून को वापिस लेना पड़ा। पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने मुसलमानों के हित के लिए तीन तलाक को रोकने के लिए कानून बनाने का निर्देश दिया। राज्यसभा में इस बिल को पास कराने के लिए विपक्षी पार्टियों का काफी विरोध सहना पड़ा।इस प्रकार भारतीयसंविधान में कार्यपालिकाअर्थात्‌लोकसभा और राज्यसभा के अधिकार ज्यादा शक्तिशाली हैं।

साथियों बात अगर हम कार्यपालिका व न्यायपालिका में तुलनात्मक शक्तिशाली के एंगल से देखें तो,भारत में कार्यपालिका और न्यायपालिका में कौन अधिक शक्तिशाली है और क्यों ?भारत में कार्यपालिका और न्यायपालिका में कार्यपालिका अधिक शक्तिशाली है। कार्यपालिका नियम और कानून बनाती है और न्यायपालिका उन कानूनों के पालन कराने में सहयोग करती है। न्यायपालिका अपने स्तर पर कानून नहीं बना सकती। कार्यपालिका न्यायपालिका के आदेशों की पालना करना आवश्यक नहीं समझती, क्योंकि वह संबंधित कानून को बदलने का अधिकार रखती है।भारत के प्रधानमंत्री और भारत के मुख्य न्यायाधीश में से कौन ज्यादा शक्तिशाली है ?अगर संविधान में देखें तो प्रधानमंत्री व्यक्ति कई साल और कई बार रह सकता है बिना अधिकतम आयु सीमा के, पर सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश का कार्यकाल सिर्फ एक बार कुछ महीने या वर्ष के लिए होता है 65 वर्ष की आयु सीमा तक होता है।प्रधानमंत्री को कभी भी हटना पड़ सकता है जबकि मुख्य न्यायाधीश को हटाना लगभग असम्भव है। मुख्य न्यायाधीश के निर्णय को पीएम को मानना होता है पर ताकतवर प्रधानमंत्री उसे संसद के द्वारा बदल भी सकता है।वर्तमान प्रधानमंत्री तो मोदी जी भी हैं, इंदिरा गांधी, नरसिंह राव भी थे और इन्होंने पद के साथ जुड़ी शक्तियों का उपयोग किया लेकिन 10 साल प्रधानमंत्री रह कर भी कांग्रेस के एकव्यक्ति ने उन शक्तियों का प्रयोग नहीं किया था। टी एन शेषन ने 6 साल में मुख्य चुनाव आयुक्त रह कर पूरी चुनाव प्रक्रिया बदल दी। उसके पहले और बाद में आने वाले आयुक्त वैसा नहीं कर पाए। इंदिरा गांधी के समय के मुख्य न्यायाधीश उनके अनुचित कार्यों (आपातकाल) को उचित ठहराते रहते थे।वस्तुतः पद शक्तिशाली नहीं होता है,पद पर बैठने वाले की क्षमता, योग्यता और नैतिक साहस से किसी पद की शक्ति तय होती है,व्यावहारिक रूप से,भारत में किसके पास अधिक शक्ति है,न्यायपालिका, कार्यकारी या फिर विधायिका ?व्यवहारिक रूप से भी भारत में शासन के तीनों अंगों यथा, विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के अधिकारों एवं शक्तियों में संतुलन स्थापित है।विधायिका और कार्यपालिका का अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर है कार्यपालिका तभी तक अस्तित्व में है जब तक उसे विधायिका का विश्वास प्राप्त है और कार्यपालिका के प्रमुख प्रधानमंत्री की अनुशंसा पर राष्ट्रपति विधायिका को भंग कर सकते हैं।जहाँ अनुच्छेद 121 और 211 विधायिका को अपने कर्तव्यों के निर्वहन में किसी भी न्यायाधीश के आचरण पर चर्चा करने से मना करते हैं, वहीं दूसरी तरफ, अनुच्छेद 122 और 212 अदालतों को विधायिका की आंतरिक कार्यवाही पर निर्णय लेने से रोकते हैं।इसके अतिरिक्त भारतीय संविधान के अनुच्छेद 105 (2) और 194 (2) विधायकों को उनकी भाषण की स्वतंत्रता और वोट देने की आजादी के संबंध में अदालतों के हस्तक्षेप से रक्षा करते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व में कार्यपालिका और न्यायपालिका में सबसे अधिक शक्तिशाली कौन? पद बढ़ा या पद पर बैठने वाले की क्षमता, योग्यता व नैतिक साहस बढ़ा ?व्यावहारिक रूप से विश्व में शासन के तीनों अंगों विधायिका, कार्यपालिका एंव न्यायपालिका के अधिकारों व शक्तियों में संतुलन स्थापित है।विश्व में कोई भी पद शक्तिशाली नहीं होता,पद पर बैठने वाले की क्षमता, योग्यता और नैतिक साहस से किसी पद की शक्ति तय होती है, सटीक विचार।

टाटा हैरियर ईवी तीन जून को होगी लॉन च, एक फीचर के कारण आसानी से पहाड़ चढ़ गई एसयूवी, नए टीजर में रेंज सहित मिली फीचर्स की जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा हैरिअर ईवी का नया टीजर जारी किया है। टीजर में SUV को ऊंचे पहाड़ पर चढ़ते हुए दिखाया गया है जिससे इसकी क्षमता का पता चलता है। इसमें 55 से 60 kWh की बैटरी मिल सकती है जिससे 500 से 550 किलोमीटर की रेंज मिलेगी। Tata Harrier EV के लॉन्च से पहले सोशल मीडिया पर जारी हुआ दूसरा टीजर है। इसकी शुरुआती कीमत 20 लाख रुपये हो सकती है।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माता Tata Motors की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से हाल में ही Tata Harrier EV का नया वीडियो टीजर जारी किया गया है। नए टीजर में किस तरह के फीचर्स की जानकारी मिल रही है। एसयूवी को कब लॉन्च किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Tata Harrier EV का नया टीजर हुआ जारी

टाटा हैरियर ईवी का नया वीडियो टीजर सोशल मीडिया पर जारी किया गया है। निर्माता की ओर से इस एसयूवी के कई फीचर्स की जानकारी नए टीजर में मिल रही है।

क या मिली जानकारी

सोशल मीडिया पर जारी हुए नए वीडियो टीजर में एसयूवी को एक ऊंचे पहाड़ पर चढ़ाया जा रहा है। जिसमें गाड़ी के कई फीचर्स और क्षमता की जानकारी मिल रही है। एसयूवी को QWD ऑफ रोडिंग का फीचर भी दिया गया है। इसके साथ ही इसमें ऑफ रोड असिस्ट, ट्रांसपेरेंट मोड, रॉक क्रॉल, स्नो मोड, ADAS, सैंड मोड, 360 डिग्री कैमरा, एलईडी लाइट्स, पार्किंग सेंसर, पैनोरमिक सनरूफ, शॉर्क फिन एंटीना, रियर वाइपर और वॉशर जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इसके साथ ही टीजर में दिखाया गया है कि कितनी आसानी से एसयूवी 34 डिग्री इंकलाइन पर भी पहाड़ चढ़ जाती है।

कितनी होगी रेंज

निर्माता की ओर से नई इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर लॉन्च की जाने वाली Tata Harrier EV में 55 से 60 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया जा सकता है। जिससे इस एसयूवी को फुल चार्ज में 500 से 550 किलोमीटर के आस-पास की रेंज मिल सकती है। इसके साथ ही इसमें निर्माता की ओर से 4X4 जैसे फीचर को भी दिया जाएगा।

कितनी होगी कीमत

हैरियर ईवी के लॉन्च के बाद ही सही कीमत की जानकारी मिल पाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इस एसयूवी को 20 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के आस-पास लॉन्च किया जा सकता है।

किनसे होगा मुकाबला

टाटा हैरियर ईवी को बाजार में Mahindra XEV9e, BYD Atto3, MG ZS EV जैसी इलेक्ट्रिक एसयूवी से सीधे तौर पर कीमत, फीचर्स, रेंज, डायमेंशन में चुनौती मिलेगी। इसके अलावा इसे Hyundai Creta Electric और जल्द लॉन्च होने वाली Maruti Suzuki E Vitara से भी कुछ मामलों में चुनौती मिल सकती है।

विनफास्ट करेगी दो इलेक्ट्रिक SUVs को भारत में पेश, जानें कब तक लॉन्च होंगी दोनों एसयूवी

वियतनाम की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता कंपनी Vinfast भारतीय बाजार में जल्द ही एंट्री करने वाली है। निर्माता की ओर से कब तक भारत में औपचारिक तौर पर अपनी गाड़ी को लॉन्च किया जा सकता है। किस गाड़ी के लॉन्च से भारत में सफर को शुरू किया जाएगा। इसके बाद और किन कारों को अगले कुछ महीनों में लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। वियतनाम की प्रमुख इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Vinfast की ओर से भारतीय बाजार में अपने सफर को शुरू करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से कब तक और किस गाड़ी को भारतीय बाजार में सबसे पहले लॉन्च किया जाएगा। साल 2025 में अपने पोर्टफोलियो में किन कारों को निर्माता ऑफर करेगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Vinfast जल द शुरू करेगी सफर

विनफास्ट की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही सफर को शुरू करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से सितंबर 2025 से इसकी शुरूआत की जाएगी। जानकारी के मुताबिक फेस्टिव सीजन से पहले ही निर्माता अपनी पहली इलेक्ट्रिक एसयूवी को भारत में लॉन्च करेगी।

किस गाड़ी को किया जाएगा सबसे पहले लॉन्च

जानकारी के मुताबिक Vinfast VF7 इलेक्ट्रिक एसयूवी को भारतीय बाजार में सबसे पहले लॉन्च किया जाएगा। इसमें 75.3 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया जाता है जिससे 431 किलोमीटर की रेंज मिलती है। इसमें लगी मोटर से इसे 348 हॉर्स पावर की पावर मिलती है।

दूसरी गाड़ी के तौर पर आएगी VF6

विनफास्ट की ओर से दूसरी गाड़ी के तौर पर VF6 को भी भारतीय बाजार में लॉन्च किया जाएगा। इसमें 59.6 KWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है जिसके साथ दी गई मोटर से 201 हॉर्स पावर मिलती है। सिंगल चार्ज में एसयूवी को 381 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है।

2026 के शुरू में लॉन्च होगी ये ईवी

2025 में दो इलेक्ट्रिक एसयूवी लॉन्च करने के बाद निर्माता की ओर से तीसरी गाड़ी के तौर पर VF3 को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया जाएगा। यह एक कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक गाड़ी होगी, जिसे MG Comet EV, Tata Tiago EV जैसी कारों से चुनौती मिलेगी। VinFast VF 3 में 18.64 kWh की क्षमता का बैटरी पैक दिया जा सकता है। जिसके साथ दी गई इलेक्ट्रिक मोटर से 41 पीएस की पावर और 110 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। सिंगल चार्ज में बैटरी 215 km तक की ड्राइविंग रेंज देती है। इसकी बैटरी महज 36 मिनट में 10-70 प्रतिशत तक चार्ज हो जाती है।

जल द शुरू होगी बुकिंग

निर्माता की ओर से जल्द ही इन कारों के लिए बुकिंग शुरू की जाएगी। जानकारी के मुताबिक जून के आखिर या जुलाई के शुरू में इन कारों के लिए बुकिंग को शुरू कर दिया जाएगा।

ऑटो एक्सपो में हो चुकी हैं पेश

जनवरी 2025 में हुए ऑटो एक्सपो के दौरान इन कारों को विनफास्ट की ओर से भारतीय बाजार में पेश किया जा चुका है। जनवरी में निर्माता ने VF7 और VF6 को औपचारिक तौर पर पेश किया था। जबकि अपने पोर्टफोलियो की अन्य सभी कारों को भी शोकेस किया गया था।

रिनॉल्ट क्विड वर्सेज मारुति एस प्रेसो : कौन सी एंट्री-लेवल गाड़ी रहेगी आपके लिए बेहतर ? जानें पूरी डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में कम कीमत में दो कारों को एसयूवी से प्रेरित डिजाइन के साथ ऑफर किया जाता है। जिनमें Renault Kwid और Maruti Suzuki S Presso शामिल हैं। इंजन माइलेज फीचर्स और कीमत के मामले में दोनों में से किस गाड़ी को खरीदना आपके लिए ज यादा बेहतर साबित हो सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल ली। भारत में एंट्री लेवल कार के तौर पर Renault Kwid और Maruti Suzuki S Presso को एसयूवी से प्रेरित डिजाइन के साथ ऑफर किया जाता है। इंजन, माइलेज फीचर्स और कीमत के मामले में दोनों में किस एसयूवी को खरीदना ज्यादा बेहतर विकल्प साबित हो सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Renault Kwid Vs Maruti S Presso डिजाइन

देश में एसयूवी डिजाइन वाली कारों को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। इसे देखते हुए निर्माताओं की ओर से कम कीमत वाली कुछ हैचबैक कारों को भी एसयूवी से प्रेरित डिजाइन के साथ ऑफर किया जा रहा है। इसमें Renault की ओर से Kwid और Maruti Suzuki की ओर से S Presso जैसी कार को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है।

Renault Kwid Vs Maruti S Presso इंजन

रेनो की ओर से क्विड को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाता है। इसमें एक लीटर की क्षमता के पेट्रोल इंजन को दिया जाता है। जिससे कार को 69 पीएस की पावर और 92.5 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसके साथ ही इस गाड़ी को 5स्पीड मैनुअल और एएमटी के विकल्प के साथ ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी को एक लीटर पेट्रोल में 21.46 किलोमीटर से 22.3 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है।

वहीं Maruti Suzuki S Presso को भी एक लीटर की क्षमता के पेट्रोल इंजन के साथ बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। इसमें लगे एक लीटर पेट्रोल इंजन से 68.52 पीएस की पावर और 91.1 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। एस प्रेसो में भी 5स्पीड मैनुअल और एजीएस ट्रांसमिशन को ऑफर किया जाता है। मारुति के मुताबिक इस इंजन को एक लीटर पेट्रोल में 24.12 से 25.30 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है।

Renault Kwid Vs Maruti S Presso फीचर्स

Renault Kwid में निर्माता की ओर से 184 एमएम की ग्राउंड क्लियरेंस, एलईडी डीआरएल, पावर विंडो, रिमोट की-लैस एंट्री, स्टेयरिंग माउंटिड कंट्रोल्स, 20.32 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, एबीएस, ईबीडी, एयरबैग, रिवर्स पार्किंग सेंसर, रियर व्यू कैमरा, हिल स्टार्ट असिस्ट जैसे कई फीचर्स दिए जाते हैं।

वहीं Maruti S Presso में भी रिमोट की-लैस एंट्री, ईएसपी, हिल स्टार्ट असिस्ट, एबीएस, ईबीडी, रिवर्स पार्किंग सेंसर, डिजिटल डिस्प्ले जैसे फीचर्स मिलते हैं।

Renault Kwid Vs Maruti S Presso कीमत

Renault Kwid को 4.69 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 6.44 लाख रुपये तक है।

वहीं Maruti Suzuki S Presso की एक्स शोरूम कीमत 4.26 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 6.11 लाख रुपये एक्स शोरूम तक है।

समीक्षा

अगर आप अपने लिए ऐसी गाड़ी खरीदने का मन बना रहे हैं, जो डिजाइन में एसयूवी जैसी लगती है साथ ही थोड़े ज्यादा फीचर्स मिलते हैं तो आप Renault Kwid को खरीद सकते हैं। वहीं अगर आपको मारुति सुजुकी की विरासत के साथ गाड़ी खरीदनी है तो फिर आप Maruti Suzuki S Presso को खरीद सकते हैं।

ओला S1Z और Ola Gig की डिलीवरी में होगी देरी, भविष्य अग्रवाल ने बताया क्या है कारण

परिवहन विशेष न्यूज

ओला इलेक्ट्रिक अब S1Z और ओला गिग की डिलीवरी में देरी करेगी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक Bhavish Aggarwal ने इन उत पादों की डिलीवरी में देरी का कारण भी बताया है। इन स कूटर्स को कब लॉन च किया गया था। किस कीमत पर इनको ऑफर किया गया था। अब किस कारण से इनकी डिलीवरी में देरी हो रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में इलेक्ट्रिक दो पहिया वाहनों की बिक्री करने वाली प्रमुख निर्माता Ola Electric की ओर से अब एक और बड़ी खबर आ रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से अब S1Z और Ola Gig की डिलीवरी में देरी हो जाएगी। ऐसा क्यों हो रहा है। निर्माता की ओर से क्या जानकारी दी गई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Ola S1Z और Gig में होगी देरी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक ओला इलेक्ट्रिक की ओर से ऑफर किए गए Ola S1Z इलेक्ट्रिक स्कूटर और Ola Gig की डिलीवरी में अब देरी हो सकती है।

क या है कारण

रिपोर्ट्स के मुताबिक ओला इलेक्ट्रिक के फांउडर और सीईओ Bhavish Aggarwal ने दोनों उत्पादों की देरी को लेकर निवेशकों को जानकारी दी है कि वह अपनी इलेक्ट्रिक बाइक पर ध्यान केंद्रित कर रही है जिस कार इन उत्पादों की डिलीवरी में देरी होगी।

Bhavish ने और क या कहा

Ola Electric के फाउंडर और सीईओ Bhavish Aggarwal ने अपने निवेशकों को कहा है कि फिलहाल हमारा ध्यान सिर्फ Ola Roadster बाइक पर है। जिसमें Roadster X, Roadster X+ और इसी सीरीज की और भी बाइक्स शामिल हैं। Gig, Gig plus, S1Z और तीन पहिया स्कूटर के प्लेटफॉर्म को कुछ समय बाद लाया जाएगा।

पिछले साल हुए थे लॉन च

ओला की ओर से एक कार्यक्रम के दौरान Ola S1Z और Ola Gig को पिछले साल नवंबर महीने में लॉन्च किया गया था। इनकी डिलीवरी भी मई 2025 के आस-पास शुरू होने की उम्मीद की जा रही थी, लेकिन Ola Roadster की तरह ही इनकी भी डिलीवरी में देरी हो सकती है।

कैसा है Ola Gig

ओला की ओर से नवंबर 2024 में Ola Gig को लॉन्च किया गया था। तभी इसकी बुकिंग भी शुरू की गई थी। इसमें 1.5 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया जाएगा, जिससे इसे 112 किलोमीटर की रेंज और 25 किलोमीटर प्रति घंटे की टॉप स्पीड मिल पाएगी। यह स्कूटर B2B के लिए बनाया गया है। इसके अलावा Ola Gig+ में रिमूवेबल बैटरी के विकल्प दिए गए हैं और इसकी रेंज दो बैटरी के साथ 157 किलोमीटर होगी। Ola Gig की कीमत 39999 रुपये और Ola Gig+ की एक्स शोरूम कीमत 49999 रुपये है।

कैसा है Ola S1Z

ओला की ओर से S1Z को भी नवंबर 2024 में लॉन्च किया गया था। इस स्कूटर में भी 1.5 kWh की क्षमता की बैटरी दी गई है। जिससे इसे दो बैटरी से 146 किलोमीटर की रेंज मिलती है। इसकी कीमत 59999 रुपये है। इसके अलावा Ola S1Z+ में भी 1.5 kWh की क्षमता की बैटरी दी गई है इसमें भी दो बैटरी से 146 किलोमीटर की रेंज मिलती है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 64999 रुपये रखी गई है।

नैतिक मूल्यों और भौतिक प्रगति के बीच की खाई को पाटना

विजय गर्ग

इन लोगों के पास जो प्रतिमान है वह नैतिक विकास के मानदंडों के गंभीर विरोधाभास में कमोबेश अक्सर होता है। इतना ही नहीं, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास या आर्थिक और औद्योगिक विकास अक्सर विकास के अन्य मापदंडों के साथ संघर्ष में होता है। उदाहरण के लिए, औद्योगिक विकास का उद्देश्य अधिक से अधिक कारों, स्कूटरों, जीपों, ट्रकों आदि का उत्पादन और विपणन करना है....

हम एक विरोधाभासी दुनिया में रहते हैं जहां एक तरफ कुछ लोग मूल्य-आधारित समाज के निर्माण में बहुत रुचि दिखाते हैं और वे मूल्य प्रणाली को मजबूत करने की बात करते हैं क्योंकि उन सभी को एहसास होता है कि वर्तमान अस्वस्थता नैतिक मानकों में गिरावट के कारण है समाज। तो, ऐसे लोगों का एक वर्ग है जो नैतिक विकास की बात करते हैं या जिसे मानव संसाधन विकास कहा जाता है। वहीं कुछ लोग वैज्ञानिक और तकनीकी विकास, आर्थिक विकास या ग्रामीण विकास की बात करते हैं.

इन लोगों के पास जो प्रतिमान है वह नैतिक विकास के मानदंडों के गंभीर विरोधाभास में कमोबेश अक्सर होता है। इतना ही नहीं, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास या आर्थिक और औद्योगिक विकास अक्सर विकास के अन्य मापदंडों के साथ संघर्ष में होता है। उदाहरण के लिए, औद्योगिक विकास का उद्देश्य अधिक से अधिक कारों, स्कूटरों, जीपों, ट्रकों आदि का उत्पादन और विपणन करना है और इस तरह की अन्य चीजों की देखभाल करना है कि पर्यावरण पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, लोगों का स्वास्थ्य और उनकी आदतें और जीवन शैली, आदि।

उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि हर साल मोटर वाहनों का एक बड़ा जोड़ उस धुएं को भी जोड़ देगा जो लोगों के लिए खतरनाक है और यह लोगों के स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करेगा। तो, इस तरह का विकास वास्तव में, लोगों के हित के लिए अनैतिक है। इसलिए हमें विकास के एक और मॉडल के बारे में सोचना चाहिए जिसमें लोग गति से और सुविधा के साथ यात्रा करने में सक्षम हो सकते हैं लेकिन पर्यावरण भी खराब नहीं होता है। इसी तरह, वे लोग जो समाज कल्याण से चिंतित हैं, अधिक धर्मार्थ अस्पताल खोलते हैं और देखभाल किए बिना अधिक बेड जोड़ते हैं कि अधिक से अधिक बीमारियां क्यों फैल रही हैं और अस्पतालों में जाने वाले रोगियों की संख्या बढ़ रही है। खराब पोषण, प्रदूषण, मानसिक तनाव और अस्वस्थ जीवन शैली जैसी बीमारी के मूल कारणों को संबोधित करने के बजाय - हम केवल उपचार सुविधाओं का विस्तार कर रहे हैं। यदि निवारक स्वास्थ्य सेवा और जागरूकता अभियानों को चिकित्सा बुनियादी ढांचे के रूप में ज्यादा प्राथमिकता दी गई, तो हम अस्पतालों पर बोझ को काफी कम कर सकते हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से, आधुनिक समाज अक्सर अपने स्रोत पर बीमारी को ठीक करने के बजाय लक्षणों का इलाज करता है। फिर, शहर अब विस्तार कर रहे हैं और गांवों को शहरों में तब्दील किया जा रहा है। नतीजतन, कृषि क्षेत्रों को आवासीय, वाणिज्यिक या औद्योगिक भवनों में परिवर्तित किया जा रहा है। इसे विकास भी कहा जाता है। लेकिन लोगों को इस बात का एहसास नहीं है कि इससे कई समस्याएं पैदा होती हैं। जो लोग नौकरियों के लिए छोटे शहरों से मेगासिटी या मेट्रोपोलिया या उपग्रह शहरों में प्रवास करते हैं, वे अपनी आजीविका कमाने के लिए रेल या सड़क द्वारा लंबी दूरी तक दैनिक यात्रा करते हैं।

उनमें से ज्यादातर सुबह जल्दी अपने घर छोड़कर देर शाम वहां पहुंचते हैं। न केवल इससे घर और परिवार में कई समस्याएं होती हैं, बल्कि सरकार को अतिरिक्त ट्रेनों और बसों आदि की व्यवस्था भी करनी होती है, जिसके परिणामस्वरूप

दैनिक यात्रा में बहुत सारी ऊर्जा, समय और लोगों का पैसा खो जाता है और सरकार को परिवहन के आवश्यक साधन प्रदान करने पर भी बहुत खर्च करना पड़ता है। साथ ही, यह सब गंभीर ध्वनि प्रदूषण और तनाव का कारण बनता है। यदि, इसके बजाय, मध्यम आकार के आत्मनिर्भर शहर / गाँव थे, जो बेहतर होते, लेकिन आजकल लोग ऊंची इमारतों और महान शहरों पर गर्व महसूस करते हैं, क्योंकि इन्हें विकास के संकेत माना जाता है।

कई लोगों को इस तथ्य का एहसास नहीं है कि हमारी अधिकांश समस्याएं आबादी की उच्च विकास दर से भी आती हैं। क्योंकि जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही है, परिवहन के लिए अधिक से अधिक वाहन, आवासीय आवास के लिए घर, उपचार के लिए अस्पताल आदि। की आवश्यकता है। यह सभी विकास को कम करता है। लोग सोचते हैं कि एक ऐसा देश जिसके पास कई अस्पताल, डॉक्टर, अदालतें, जज आदि हैं। एक विकसित देश है। लेकिन, वे शायद ही महसूस करते हैं कि वास्तविक रूप से एक विकसित देश है, वह वह है जहां लोग बहुत कम या कोई अपराध नहीं करते हैं और जहां बहुत बड़ी संख्या में लोग स्वस्थ हैं।

इसलिए, एक उचित प्रतिमान की आवश्यकता है जिसमें गठन तत्व एक दूसरे के साथ संघर्ष में नहीं हैं। वर्तमान में, समाज एक प्रतिमान पर आधारित है जो आंतरिक विरोधाभास की पुनरावृत्ति करता है। इसलिए, मानव जाति को अब एक ऐसे मॉडल की आवश्यकता है जो सरल, प्रेरणादायक, उत्थान, प्राकृतिक और बिना किसी आंतरिक संघर्ष या विरोधाभासों के हो। यह एक मूल्य-आधारित समाज का मॉडल है जिसमें सभी प्रकार के विकास अपने चरम पर हैं और अन्य पहलुओं के विकास के अनुरूप हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार
प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर

कहानी: कांटा

विजय गर्ग

रूपा अपने वैवाहिक जीवन से खुश थी पर उस की खुशी देख कर शिखा जलभुन गई क्योंकि उस का दांपत्य खुशहाल नहीं था. आखिर शिखा ने एक चाल चली. पर क्या उस की चाल कामयाब हुई.

रूपा पत्रिका ले कर बैठी ही थी कि तभी कालबैल की घंटी बजी. दरवाजा खोला तो सामने उस की बचपन की सहेली शिखा खड़ी थी. शिखा उस की स्कूल से ले कर कालेज तक की सहेली थी. अब सुजीत के सब से घनिष्ठ मित्र नवीन की पत्नी थी और एक टीवी चैनल में काम करती थी. रूपा के मन में कुछ देर पहले तक शांति थी. अब उस की जगह खीज ने ले ली थी. फिर भी उसे दरवाजा खोल हंस कर स्वागत करना पड़ा, "अरे तू? कैसे याद आई? आ जल्दी से अंदर आ."

शिखा ने अंदर आ कर पैनी नजरों से पूरे ड्राइंगरूम को देखा. रूपा ने ड्राइंगरूम को ही नहीं, पूरे घर को सुंदर ढंग से सजा रखा था. खुद भी खूब सजीधजी थी. फिर शिखा सोफे पर बैठते हुए बोली, "इधर एक काम से आई थी सोचा तुम से मिलती चलूं कैसी है तू?"

"मैं ठीक हूं, तू अपनी सुना?"

सामने स्टैंड पर रूपा के बेटे का फ्रेम में लगा फोटो रखा था. उसे देखते ही शिखा ने कहा, "तेरा बेटा तो बड़ा हो गया."

"हां, मगर बहुत शैतान है. सारा दिन परेशान किए रहता है."

शिखा ने देखा कि यह कहते हुए रूपा के उजले मुख पर गर्व छलक आया है.

"घर तो बहुत अच्छी तरह सजा रखा है लगता है बहुत सुघड़ गृहिणी बन गई है."

"क्या करूं, काम कुछ है नहीं तो घर सजाना ही सही."

"अब तो बेटा बड़ा हो गया है. नौकरी कर सकती हो."

"मामूली ग्रैजुएशन डिग्री है मेरी. मु झे कौन नौकरी देगा? फिर सब से बड़ी यह कि इन को मेरा नौकरी करना पसंद नहीं."

"तू सुजीत से डरती है?"

"इस में डरने की क्या बात है? पतिपत्नी को एकदूसरे की पसंदनापसंद का खयाल तो रखना ही पड़ता है."

रिखा हंसी, "अगर दोनों के विचारों में जमीनआसमान का अंतर हो तो?

यह सुन कर रूपा झुं झला गई तो वह शिखा से बोली, "अच्छा तू यह बता कि छोटा नवीन कब ला रही है?"

शिखा ने कंधे झटकते हुए कहा, "मैं तेरी तरह घर में आराम का

जीवन नहीं काट रही. टीवी चैनल का काम आसान नहीं. भरपूर पैसा देते हैं तो दम भी निकाल लेते हैं."

शिखा की यह बात रूपा को अच्छी नहीं लगी. फिर भी चुप रही, क्योंकि शिखा की बातों में ऐसी ही नीरसता होती थी. रूपा की शादी मात्र १० वर्ष की आयु में हो गई थी. लड़का उस के पापा का सब से प्रिय स्टूडैंट था और उन के अधीन ही पी.एचडी. करते ही एक मल्टीनैशनल कंपनी में ऐग्जीक्यूटिव लग गया था. मोटी तनख्वाह के साथसाथ दूसरी पूरी सुविधाएं भी और देशविदेश के दौरे भी.

लड़के के स्वभाव और परिवार की अच्छी तरह जांच कर के ही पापा ने उसे अपनी इकलौती बेटी के लिए चुना था. हां, मां को थोड़ी आपत्ति थी लेकिन सम झने पर वे मान गई थीं. पापा मशहूर अर्थशास्त्री थे. देशविदेश में नाम था.

रूपा अपने वैवाहिक जीवन से बेहद खुश थी. होती भी क्यों नहीं, इतना हैंडसम और संपन्न पति मिला था. और विवाह के कुछ अरसा बाद ही उस की गोद में एक प्यारा सा बेटा भी आ गया था. शादी को 8 वर्ष हो गए थे. कभी कोई शिकायत नहीं रही. वह भी तो बेहद सुंदर थी. उस पर कई सल्पाठी मरते थे, पर उस का पहला प्यार पति सुजीत ही थे. बेटी को सुखी देख कर उस के मातापिता भी बहुत खुश थे. बात बदलते हुए रूपा ने कहा, "छोड़ इन बातों को इतने दिनों बाद मिली है चल सहेलियों की बातें करती हैं."

शिखा थोड़ी सहज हुई. बोली, "तू भी तो कभी मेरी खबर लेने नहीं आती."

"देख झगड़े की बात नहीं सचाई बता रही हूं कितनी बार हम लोगों ने तु झे और नवीन भैया को बुलाया. भैया तो एकाध बार आए भी पर तू नहीं फिर तू ने तो कभी हमें बुलाया ही नहीं.. अच्छा यह सब छोड़. बोल क्या लेगी चाय या ठंडा? गरम सूप भी है."

"सूप ही ला घर का बना सूप बहुत दिनों से नहीं पीया."

थोड़ी ही देर में रूपा २ कप गरम सूप ले आई. फिर 1 शिखा को पकड़ा और दूसरा स्वयं पकड़ कर शिखा के सामने बैठ गई. बोली, "बता कैसी चल रही है तेरी गृहस्थी?"

जब रूपा सूप लेने गई थी तब शिखा ने घर के चारों ओर नजर डाली थी. वह सम झ गई थी कि रूपा बहुत सुखी और संतुष्ट जीवन जी रही है. उस का स्वभाव ईर्ष्यालु था ही. अतः सहेली का सुख उसे अच्छा नहीं लगा. वह रूपा का दमकता नहीं मलिन व दुखी चेहरा देखना चाहती थी.

शिखा यह भी सम झ गई थी कि उस के सुख की जड़ बहुत मजबूत है. सहज उखाड़ना संभव नहीं. आज तक वह उसे हर बात में पछाड़ती आई है. पढ़ाई, लेखन प्रतियोगिता, खेल, अभिनय, नृत्य व संगीत सब में वह आगे रहती आई है. रूपा है तो साधारण स्तर की लड़की पर कालेज का श्रेष्ठ हीरा लड़का उस के आंचल में आ गया था. फिर समय पर वह मां भी बन गई. पति प्रेम, संतान स्नेह से भरी है वह. ऊपर से मातापिता का भरपूर प्यार, संरक्षण भी है उस के पास. संपन्नता अलग से.

यह सब सोच शिखा बेचैन हो उठी कि जीवन की हर बाजी उस से जीत कर यह अंतिम बाजी उस से हार जाएगी पर करे भी तो क्या? कैसे उस की जीत को हार में बदले? कुछ तो करना ही पड़ेगा पर क्या करे? सोचना होगा, हां कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही होगा. रूपा में बुद्धि कम है. उसे बहकाना आसान है, तो कोई रास्ता निकालना ही पड़ेगा जरूर कुछ सोचेगी वह.

मां से फोन पर बातें करते हुए रूपा ने शिखा के अचानक आने की बात कही तो वे शंकित

हो उठीं, "बहुत दिनों से उसे देखा नहीं अचानक तेरे घर कैसे आ गई?"

रूपा बेटे को दूध पिलाते हुए सहज भाव से बोली, "नवीन भैया तो आते रहते हैं वही नहीं आती थी उन से दूर की रिश्तेदारी भी है. सुजीत के भाई लगते हैं और दोस्त तो हैं ही. पर आज बता रही थी कि पास ही चैनल के किसी काम से आई थी तो "

"मु झे उस पर जरा भी विश्वास नहीं. मु झे तो लगता है तेरा घर देखने आई थी," मां रूपा की बात बीच ही में काटते हुए बोली.

यह सुन रूपा अवाक रह गई. बोली, "मेरे घर में ऐसा क्या है, जो देखने आएगी?"

"जो उस के घर में नहीं है. देख रूपा,

वह बहुत धूर्त, ईर्ष्यालु है बिना स्वार्थ के वह एक कदम भी नहीं उठाती तू उसे ज्यादा गले मत लगाना."

"मां वह आती ही कहां है? वर्षों बाद तो मिली है."

"यही तो चिंता है. वर्षों बाद अचानक तेरे घर क्यों आई?"

रूपा हंसी, "ओह मां, तुम भी कुछ कम शंकालु नहीं हो अरे, बचपन की सहेली से मिलने को मन किया होगा क्या बिगाड़ेगी मेरा?"

"मैं यह नहीं जानती कि वह क्या करेगी पर वह कुछ भी कर सकती है. मुझे लग रहा है वह फिर आएगी ज्यादा घुलना नहीं, जल्दी विदा कर देना बातें भी सावधानी से करना."

अब रूपा भी घबराई, "ठीक है मां." मां की आशंका सच हुई. एक दिन फिर आ धमकी शिखा. रूपा थोड़ी शंकित तो हुई पर उस का आना बुरा नहीं लगा. अच्छा लगने का कारण यह था कि सुजीत औफिस के काम से भुवनेश्वर गए थे और बेटा स्कूल बहुत अकेलापन लग रहा था. उस ने शिखा का स्वागत किया. आज वह कुछ शांत सी लगी.

इधरउधर की बातों के बाद अचानक बोली, "तेरे पास तो बहुत सारा खाली समय होता है क्या करती है तब?"

रूपा हंसी, "तु झे लगता है खाली समय होता है पर होता है नहीं बापबेटे दोनों की फरमाइशों के मारे मेरी नाक में दम रहता है."

"जब सुजीत बाहर रहता है तब?"

"हां तब थोड़ा समय मिलता है. जैसे आज वे भुवनेश्वर गए हैं तो काम नहीं है. उस समय मैं किताबें पढ़ती हूं. तुझे तो पता है मु झे पढ़ने का कितना शौक है."

"पढ़ तो रात में भी सकती है?"

रूपा सतर्क हुई, "क्यों पूछ रही है?"

"देख रूपा, तू इतनी सुंदर है कि २०-२१ से ज्यादा की नहीं लगती अभिनय, डांस भी आता है. हमारे चैनल में अपने सीरियल बनते हैं. एक नया सीरियल बनना है जिस के लिए नायिका की खोज चल रही है. सुंदर, भोली सी कालेज स्टूडैंट का रोल है. तु झे तो दौड़ कर ले लेंगे. कहे तो बात करूं?"

रूपा हंसने लगी, "तू पागल तो नहीं हो गई है?"

"क्यों इस में पागल होने की क्या बात है?"

"कालेज, स्कूल की बात और है सीरियल की बात और. न बाबा न, मु झे घर से ही फुरसत नहीं. फिर मैं टीवी पर काम करूं यह कोई पसंद नहीं करेगा."

"अरे पैसों की बरसात होगी. तू क्या सुजीत से डरती है?"

"उन की छोड़. उन से पहले मांपापा ही डांटेंगे. फिर अब तो बेटा भी बोलने लग गया है. मु झे पैसों का लालच नहीं है. पैसों की कोई कमी नहीं है. सुजीत हैं, पापा हैं."

शिखा सम झ गई कि रास्ता बदलना पड़ेगा. अतः फिर सामान्य बातें करतेकरते अचानक बोली, "तू सुजीत पर बहुत भरोसा करती है न?"

यह सुन रूपा अवाक रह गई, बोली, "तेरा दिमाग तो ठीक है? वे मेरे पति हैं. मेरा उन पर भरोसा नहीं होगा तो किस पर करूंगी?"

"तु झे पूरा भरोसा है कि भुवनेश्वर ही गए हैं काम से?"

"अरे, मैं ने खुद उन का टूअर प्रोग्राम देखा है. मैं उस होटल को भी जानती हूं जिस में वे ठहरते हैं. मैं भी तो कितनी बार साथ में गई हूं. इस बार भी जा रही थी पर बेटे की परीक्षा में हफ्ता भर है, इसलिए नहीं जा पाई. फिर वे अकेले नहीं गए हैं. साथ में पी.ए. और क्लर्क रामबाबू भी हैं. दिन में २-३ बार फोन भी करते हैं."

"तू सच में जरूरत से ज्यादा मूर्ख है. तू मर्दों की जात को नहीं पहचानती. बाहरी जीवन में वे क्या करते हैं, कोई नहीं जानता."

रूपा अंदर ही अंदर कांप गई. शिखा की उपस्थिति उसे अखरने लगी थी. मम्मी

की बातें बारबार याद आने लगीं. पर घर से धक्के मार उसे निकाल तो नहीं सकती थी. उस ने सोचा कि इस समय खुद पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है शिखा की नीयत पर उसे भरोसा नहीं था.

"मैं घर और बच्चे को छोड़ कर सुजीत के पीछे ही पड़ी रहूं तो हो गया काम फिर उन पर मु झे पूरा विश्वास है. दिन में कई बार फोन करते हैं उन के साथ जो गए हैं उन्हें भी मैं अच्छी तरह जानती हूं."

"बाप रे, तू तो सीता को भी मात देती लगती है."

इस बार शिखा हंसहंसते लोटपोट हो गई.

"फोन वे करते हैं. तु झे क्या पता कि भुवनेश्वर से कर रहे हैं या मनाली की खूबसूरत वादियों में किसी और लड़की के साथ घूमने "

हिल गई रूपा, "यह क्या बक रही है? मेरे पति ऐसे नहीं हैं."

"सभी मर्द एकजैसे होते हैं."

"नवीन भैया भी ऐसे नहीं हैं."

"ठीक है, मैं बताती हूं कैसे परखेगी जब वे टूअर से लौटें तो उन के कपड़े चैक करना किसी महिला के केश, मेकअप के कोई दाग, फीमेल इत्र की गंध है या नहीं १-4 बार अचानक औफिस पहुंच जा."

"छिः छिः कितनी गंदगी है तेरी सोच. मु झे अब नवीन भैया पर तरस आ रहा है. अपना घर, नवीन भैया का जीवन बिगाड़ चैन नहीं अब मेरा घर बरबाद करने आई है. तू जा मेरे सिर में दर्द हो रहा है. मैं सोऊंगी."

शिखा का काम हो गया था. अतः वह हंस कर खड़ी हो गई. बोली, "जी भर कर सो ले. मैं जा रही हूं."

शिखा तो हंसती हुई चली गई, पर रूपा खूब रोई. जब बेटा स्कूल से आया तो उसे ले कर सीधे मां के पास चली गई. मां ने उसे आते देख सम सगईं कि जरूर कोई बात है. पर उस समय कोई बात नहीं की. बेटे और उसे खाना खाने बैठाया फिर बेटे को सुलाने के बाद वे बेटी के पास बैठीं,

"अब बोल, क्या बात है."

रूपा चुप रही.

"क्या आज भी शिखा आई थी?"

उस ने हां में सिर हिलाया.

"मैं ने तु झे पहले ही सावधान किया था. वह अच्छी लड़की नहीं है. वह जिस थाली में खाती है उसी में छेद करती है. हां, उस की मां सौतेली है यह ठीक है पर वे उस की सगी मां से भी अच्छी हैं. जब तक वहां रही एक दिन उसे चैन से नहीं रहने दिया. बाप से झूठी शिकायतें कर घर को तोड़ने की कोशिश करती रही. पर उस के पापा सम झदार थे. बेटी की आदत को जानते थे और अपनी पत्नी पर पूरा विश्वास था, इसलिए शिखा अपने मकसद में कामयाब न हुई. अब जब से शादी हुई है तो बेचारे नवीन के जीवन को नरक बना रखा है उस से भी मन नहीं भरा तो अब तेरे घर को बरबाद करने चली है तू क्यों बैठाती है उसे?"

"अब घर आए को कैसे भगाऊं?"

"एक कप चाय पिला कर विदा कर दिया कर बैठा कर बात मत किया कर. आज क्या ऐसा कहा जो तू इतनी परेशान है?"

रूपा ने पूरी बात बताई तो वे शंकित हुईं और गुस्सा भी आया. वे अपनी बेटी को जानती थी कि उसे चालाकी नहीं आती है उस के घर को तोड़ना बहुत आसान है. फिर बोली, "क्या तू यही मानती है कि सुजीत भुवनेश्वर नहीं गया है?"

"नहीं, मु झे उन पर पूरा विश्वास है. रामबाबू भी तो साथ हैं. यह तो शिखा कह रही थी."

"फिर भी तू विचलित है, क्योंकि संदेह का कांटा वह तेरे मन में गहरे उतार गई है. देख संदेह एक बीमारी है. अंतर इतना है कि इस का कोई इलाज नहीं है. दूसरी बीमारियों की दवा है, उन का इलाज किया जा सकता है पर संदेह का नहीं. शिखा ने यह बीमारी तु झे लगाई है. अब अगर तु झ से सुजीत को लगे और वह तु झ पर शक करने लगे तब क्या करेगी?"

कांप गई रूपा, "मु झ पर?"

"क्यों नहीं? उस के पीछे तू क्या करती है, उसे क्या पता. हफ्ताहफ्ता बाहर रहता है तब तू एकदम आजाद होती है. जब तू उस पर शक करेगी तो वह भला क्यों नहीं कर सकता?"

रूपा को काटो तो खून नहीं.

"देख पागल मत बन दूसरे की नहीं अपने मन की आवाज सुन कर चल. तू उस जैसी नहीं है. तेरे साथ तेरा बच्चा है, तू साधारण स्तर की पढ़ीलिखी है, बाहरी समाज का तु झे कोई अंदाजा नहीं है. अगर वह खाईखेली लड़की नवीन से तलाक भी ले ले तो भी उसे कोई फर्क नहीं पड़ेगा. पर तू क्या करेगी? हम हैं ठीक है पर पापा को जानती है न कितने न्यायप्रिय हैं तू गलत हुई तो यहां से तु झे तिनके का सहारा भी नहीं मिलने वाला. मैं कुछ भी नहीं कर सकती."

मां की बात सुन कर स्तब्ध रह गई रूपा कि मां ने जो कहा स्पष्ट कहा, उचित बात कही. उस के मन में शिखा कांटा बोना चाहे और वह बोने दे तो अपना ही सर्वनाश करेगी. मां ने नवीन से भी इस विषय पर बात की, यह सोच कर कि भले ही बेटी को सम झाया हो उन्होंने पर उस के मन का कांटा जड़ से अभी नहीं उखड़ा होगा.

नवीन ने उस दिन अचानक फोन कर के रूपा से कहा, "रूपा, बहुत दिन से तुम ने कुछ खिलाया नहीं. आज रात डिनर करने आऊंगा."

रूपा खुश हुई, "ठीक है भैया मैं आप की पसंद का खाना बनाऊंगी."

शाम को नवीन सुजीत के साथ ही आया.

रूपा ने चाय के साथ पकौड़े बनाए.

नवीन ने चाय पीते हुए पूछा, "रात को क्या खिला रही हो?"

"आप की पसंद के हिसाब से पालकपनीर, सूखी गोभी, बूंदी का रायता और लच्छा परांठे और कुछ चाहें तो "

"नहींनहीं, बहुत बढ़िया मेनू है. तुम बैठो. हां, सुजीत तू एक काम कर. रबड़ी ले आ."

सुजीत रबड़ी लेने चला गया तो नवीन ने कहा, "रूपा, आराम से बैठ कर बताओ पूरी बात क्या है?"

रूपा चौंकी, "क्या भैया?"

"सुजीत को लग रहा है तुम पहले जैसी सहज नहीं हो उसे तुम्हारे व्यवहार से कोई शिकायत नहीं है पर उसे लगता है तुम पहले जैसी खुश नहीं हो लगता है कुछ है तुम्हारे मन में."

रूपा चुप रही.

"रूपा तुम चुप रहोगी रही तो तुम्हारी समस्या बढ़ती ही जाएगी. बात क्या है? क्या सुजीत के किसी व्यवहार ने तुम्हें आहत किया है?"

"नहीं, वे तो कभी तीखी बात करते ही नहीं."

"पतिपत्नी का रिश्ता बहुत सहज होते हुए भी बहुत नाजुक होता है. इस में कभीकभी बुद्धि को नजरअंदाज कर के मन की बात काम करने लगती है. तुम्हारे मन में कौन सा कांटा चुभा है मु झे बताओ?"

रूपा ने कहा, "ऐसा कुछ नहीं है."

"रूपा, पतिपत्नी का रिश्ता एकदूसरे के प्रति विश्वास पर टिका होता है. मु झे लगता है सुजीत के प्रति तुम्हारे विश्वास की नींव को धक्का लगा है. पर क्यों? सुजीत ने कुछ कहा है क्या?"

शिखा ने जो संदेह का कांटा उस के मन में डाला था उस की चुभन की अवहेलना नहीं कर पा रही थी वह. इसी उल झन में उस की मानसिक शांति भंग हो गई थी. अब वह पहले जैसी खिलीखिली नहीं रहती थी और सुजीत से भी अंतरंग नहीं हो पा रही थी. उस की मानसिक उधेड़बुन उस के चेहरे पर मलिनता लाई ही, व्यवहार में भी फर्क आ गया था. उस ने सिर झुका कर जवाब दिया, "ऐसा कुछ नहीं है भैया."

"नहीं रूपा, तुम्हारे मन की उथलपुथल तुम्हारे मुख पर अपनी छाप डाल रही है. ज्यादा परेशान हो तो तलाक ले लो. सुजीत तुम्हारी खुशी के लिए कुछ भी करने को तैयार है."

रूपा चौंकी उस की आंखें फैल गईं, "तलाक?"

"क्यों नहीं? तुम सुजीत के साथ खुश नहीं हो. हम भी शिमला ही गए थे. पर अब कहां चलें?"

रूपा ने कहा, "यह हम शिखा पर छोड़ते हैं. बोल कहां चलेगी?"

शिखा ने कौफी का प्याला रखते हुए कहा, "शिमला तो हो ही आए हैं. गोवा चलते हैं?"

रूपा उछल पड़ी, "अरे वाह, देखा मेरी सहेली की पसंद. हम तो सोचते ही रह जाते."

"वहां जाने के लिए समय चाहिए, क्योंकि टिकट, ठहरने की जगह बुक करानी पड़ेगी. इस समय सीजन है आसानी से कुछ भी नहीं मिलेगा और वह भी २ परिवारों का एकसाथ," नवीन बोला.

सुजीत ने समर्थन किया, "यह बात एकदम ठीक है. तो फिर?"

"एक काम करते हैं. मेरे दोस्त का एक फार्महाउस है. ज्यादा दूर नहीं. यहां से

१० किलोमीटर है. वहां आम का बाग, सब्जी की खेती, मुरगी और मछली पालन का काम होता है. बहुत सुंदर घर भी बना है और एकदम यमुना नदी के किनारे है. ऐसा करते हैं वहां पूरा दिन पिकनिक मनाते हैं. सुबह जल्दी निकल कर शाम देर रात लौट आएंगे."

रूपा उत्साहित हो उठी, "ठीक है, मैं ढेर सारा खानेपीने का सामान तैयार कर लेती हूं."

"कुछ नहीं करना वहां का केयरटेकर बढ़िया कुक है."

शनिवार सुबह ही वे निकल पड़े. आगेपीछे २ कारें फार्महाउस के

गेट पर रुकीं. चारों ओर हरियाली के बीच एक सुंदर कौटेज थी. पीछे यमुना नदी बह रही थी. बेटा तो गाड़ी से उतरते ही पके लाल टमाटर तोड़ने दौड़ा.

थोड़ी ही देर में गरम चाय आ गई. सुबह की कुनकुनी धूप सेंकते सब चाय पीने लगे. बेटे के लिए गरम दूध आ गया था.

रूपा ने कहा, "भैया, इतने दिनों तक हमें इतनी सुंदर जगह से वंचित रखा. यह तो अन्याय है."

नवीन हंसा, "मैं ने सोचा था ये सब फूलपौधे, नदी, हरियाली, कुनकुनी धूप हम मोटे दिमाग वालों के लिए हैं बुद्धिमानों के लिए नहीं."

"ऐसे खुले वातावरण में सब के साथ आ कर शिखा भी खुश हो गई थी. उस के मन की खुंदक समाप्त हो गई थी. अतः वह हंस कर बोली, "तू सच ही कुछ? यह व्यंग्य मेरे लिए है."

सुजीत बोला, "तेरा दिमाग भी तो मोटा है तू कितना आता है यहां?"

"जब भी मौका मिलता है यहां चला आता हूं. ध्यान से देखेगा तो मेरे लैंडस्केपों में तु झे यहां की झलक जरूर दिखेगी देख न यहां काम करने वाले सब मु झे जानते हैं."

शिखा चौंकी, "तो क्या कभीकभी जो देर रात लौटते हो तो क्या यहां आते हो?"

"हां. यहां आ कर फिर दिल्ली के हंगामे में लौटने को मन नहीं करता. बड़ी शांति है यहां."

"तो तेरी कविताएं भी क्या यहीं की

उपज हैं?"

"सब नहीं, अधिकतर."

शिखा की आंखें फैल गईं, "क्या तुम कविताएं भी लिखते हो? मु झे तो पता ही नहीं था."

"३ काव्य संग्रह निकल चुके हैं एक पर पुरस्कार भी मिला है. तु झे पता इसलिए नहीं है, क्योंकि तू ने कभी जानने की कोशिश ही नहीं की कि हीरा तेरे आंचल से बंधा है. तेरी सौत कोई लड़भांस की महिला नहीं यह कविता और चित्रकला है. इन के बाल नोच सके तो नोच. भैया ही कवि परिजात हैं, जिस की तू दीवानी है."

"कवि परिजात?" प्याला छूट गया, उस

के हाथों से और फिर दोनों हाथों से मुंह छिपा कर रो पड़ी.

रूपा कुछ सम झाने जा रही थी मगर सुजीत ने रोक दिया. कान में कहा, "रोने दो बहुत दिनों का बो झ है मन पर अब हलका होने दो. तभी नौर्मल होगी."

थोड़ी देर में स्वयं ही शांत हो कर शिखा ने रूपा की तरफ देखा, "देख ले कितने धोखेबाज हैं."

रूपा यह सुन कर हंस पड़ी.

"कितनी भी अकड़ दिखाओ शिखा पर प्यार तुम नवीन को करती ही हो ये सारी हरकतें तुम्हारी नवीन को खोने के डर से ही थीं पर उन्हें आप ने आंचल से बांधे रखने का रास्ता तुम ने गलत चुना था," सुजीत बोला.

नवीन बोला, "छोड़ यार, अब हम

दूसरा हनीमून गोवा चल कर ही मनाते हैं

जब भी टिकट और होटल में जगह मिलेगी तभी चल देंगे."

रूपा सुजीत दोनों एकसाथ बोले, "जय हो."

सपनों से संघर्ष तक: ओपल की मिस वर्ल्ड 2025 की अमर यात्रा

[मिस वर्ल्ड 2025 : ओपल चुआंगश्री की कहानी सिर्फ जीत की नहीं, जज्बे की है]

एक चमकता ताज, एक मंच जो दुनिया की नजरों का केंद्र था, और एक ऐसी युवती, जिसने अपने साहस, बुद्धिमत्ता और सामाजिक बदलाव की ललक से इतिहास के पन्नों पर अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिख दिया। हैदराबाद के हाईटेक्स प्रदर्शनी केंद्र में मिस वर्ल्ड 2025 के 72वें ग्रैंड फिनाले में थाईलैंड की 21 वर्षीय ओपल सुचाता चुआंगश्री ने 107 सुंदरियों को पीछे छोड़कर न केवल ताज हासिल किया, बल्कि एक ऐसी मशाल जलाई, जो आने वाली पीढ़ियों को रास्ता दिखाएगी। यह जीत केवल एक खिताब की नहीं थी—यह थी एक ऐसी शक्ति की जीत, जो सुंदरता को साहस, करुणा और सामाजिक जिम्मेदारी के नए अर्थ देती है। ओपल ने थाईलैंड को 72 साल बाद मिस वर्ल्ड का पहला ताज दिलाया, और इस पल ने न केवल उनके देशवासियों के दिलों में उमंग भरी, बल्कि पूरे एशिया को एक नई प्रेरणा दी। उनकी कहानी एक ऐसी लहर है, जो हर उस इंसान को छूती है, जो सपनों को हकीकत में बदलने का जज्बा रखता है।

20 मार्च 2003 को फुकेत की धरती पर जन्मी ओपल सुचाता चुआंगश्री आज थाईलैंड की शान हैं। थामसैट यूनिवर्सिटी में अंतरराष्ट्रीय मामलों की पढ़ाई कर रही ओपल की शैक्षणिक उत्कृष्टता और थाई, अंग्रेजी, और चीनी भाषाओं में उनकी महारत ने उन्हें वैश्विक मंच पर एक अनूठा व्यक्तित्व बनाया है। ताज पहनने के बाद उनकी आंखों में चमक और आवाज में गर्व था, जब उन्होंने कहा, "72 साल का इंतजार आज खत्म हुआ। यह ताज मेरे देशवासियों का है, मेरे परिवार का है, और उस हर शख्स का है, जिसने मुझ पर भरोसा किया। मैं इसे थाईलैंड की मिट्टी तक ले जाऊंगी, जहां यह गर्व के साथ चमकेगा।" यह शब्द न केवल उनकी विनम्रता को दर्शाते हैं, बल्कि उनके देश के प्रति उनकी गहरी निष्ठा को भी उजागर करते हैं। ओपल की यह जीत एक व्यक्तिगत उपलब्धि से कहीं अधिक है—यह एक राष्ट्र की आकांक्षा और सपनों का प्रतीक है।

ओपल की कहानी केवल ग्लैमर और चमक-दमक की नहीं है; यह एक ऐसी योद्धा की गाथा है, जिसने जिंदगी की सबसे बड़ी चुनौतियों को अपनी ताकत बनाया। 16 साल की उम्र में एक गंभीर स्वास्थ्य संकट ने उनके जीवन को हिलाकर रख दिया था, लेकिन इसने उन्हें टूटने के बजाय एक नया मकसद दिया। उन्होंने 'ओपल फॉर हर' नामक पहल शुरू की, जो आज थाईलैंड में महिलाओं के स्वास्थ्य, खासकर ब्रेस्ट कैंसर, के प्रति जागरूकता फैलाने का एक सशक्त आंदोलन बन चुका है। यह पहल उन महिलाओं की आवाज बनी, जो दूर-दराज के गांवों में चिकित्सा सुविधाओं से वंचित हैं। मिस वर्ल्ड के मंच पर ओपल ने इस मिशन को पूरी दुनिया के सामने रखा। एक सोशल मीडिया पोस्ट में उन्होंने लिखा, "मैं हर उस महिला के लिए बोलती हूं, जो अपने परिवार की ढाल है। मेरी आवाज चुप्पी को तोड़ने के लिए है, क्योंकि चुप रहने से जिंदगियां नहीं बचतीं, लेकिन बोलने से जरूर बच सकती हैं।" यह शब्द उनकी संवेदनशीलता और सामाजिक बदलाव के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

मिस वर्ल्ड 2025 के मंच पर ओपल ने अपनी बुद्धिमत्ता और आत्मविश्वास से हर किसी को मंत्रमुग्ध कर दिया। ग्रैंड फिनाले में बॉलीवुड अभिनेता सोनू सूद ने उनसे सवाल किया, "इस यात्रा ने आपको सच्चाई और व्यक्तिगत जिम्मेदारी के बारे में क्या सिखाया, और यह

कहानियों को कैसे आकार देता है?" ओपल का जवाब एक ऐसी चिंगारी था, जिसने पूरे सभागार को रोमांचित कर दिया। उन्होंने कहा, "मिस वर्ल्ड मेरे लिए एक मंच नहीं, एक मिशन है। इसने मुझे सिखाया कि सच्चाई और जिम्मेदारी हमारे कार्यों में झलकती है। हम सभी को—चाहे वह बच्चे हों, युवा हों, या हमारे माता-पिता—किसी न किसी के लिए प्रेरणा बनना चाहिए।" उन्होंने आगे कहा, "नेतृत्व का मतलब है अपने कार्यों से दुनिया को बेहतर बनाना, कृपा और सच्चाई के साथ। यही वह शक्ति है, जो कहानियों को अमर बनाती है।" इस जवाब ने न केवल जजों को प्रभावित किया, बल्कि यह भी दिखाया कि ओपल एक ऐसी नेता हैं, जो अपने शब्दों और कर्मों से दुनिया को बदल सकती हैं।

ओपल का अंतरराष्ट्रीय अनुभव उनकी जीत का एक मजबूत आधार रहा। 2024 में मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में थाईलैंड का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने तीसरा स्थान हासिल किया था। लेकिन जब मिस वर्ल्ड थाईलैंड 2025 का खिताब उनके पास आया, तो उन्होंने मिस यूनिवर्स थाईलैंड की उपाधि छोड़ दी। यह फैसला उनके उस दृष्टिकोण को दर्शाता है, जहां खिताब से ज्यादा महत्वपूर्ण समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है। एक पोस्ट में उन्होंने लिखा, "हर संदेश, हर समर्थन मेरे लिए अनमोल है। मैं वादा करती हूं कि इस मंच का उपयोग मैं बदलाव लाने और थाईलैंड का गर्व बढ़ाने के लिए करूंगी।" यह उनके दृढ़ संकल्प और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति उनकी गहरी निष्ठा को दर्शाता है।

हैदराबाद में आयोजित इस ऐतिहासिक आयोजन में भारत की नंदिनी गुप्ता भी थीं, लेकिन वह शीर्ष आठ में जगह नहीं बना पाईं। फिर भी, इस मंच ने भारत को वैश्विक स्तर पर एक बार फिर चमकने का मौका दिया। मिस वर्ल्ड 2024 की विजेता क्रिस्टीना पिस्ज़कोवा ने ओपल को ताज पहनाया, और यह पल न केवल थाईलैंड, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक उत्सव बन गया।

ओपल सुचाता चुआंगश्री की मिस वर्ल्ड 2025 की जीत एक ताज से कहीं अधिक है—यह एक ऐसी मशाल है, जो अंधेरे को चीरकर उजाला फैलाती है। यह एक ऐसी कहानी है, जो साहस, करुणा और बदलाव की ताकत को परिभाषित करती है। ओपल ने न केवल थाईलैंड का गौरव बढ़ाया, बल्कि हर उस इंसान के लिए एक मिसाल कायम की, जो यह मानता है कि सपने सच हो सकते हैं। जैसे ही वह थाईलैंड लौटेंगी, यह ताज उनकी मिट्टी को गर्व से चूमेगा, और उनकी कहानी लाखों दिलों में एक नई क्रांति जगा देगी। यह ताज केवल एक आभूषण नहीं है—यह है एक नई दुनिया की शुरुआत, जहां सुंदरता का मतलब है प्रेरणा देना, बदलाव लाना और सच्चाई को जीना।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

शांति का क्रेडिट? क्षमा करें ट्रंप, ये भारत की कहानी है

[न कोई मध्यस्थ, न कोई मोहताज: भारत खुद अपनी ताक़त है]

जब शब्द तलवारों से भी पैने हो जाएँ और दावे विश्व मंच पर सत्य को चुनौती देने लगें, तब एक राष्ट्र की साहसिक गूंज ही वह ताकत बनती है जो प्रचार के तूफान को चीर देती है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर भारत-पाकिस्तान के बीच कथित संघर्ष विराम का तमगा अपने सीने पर सजाया, दावा करते हुए कि उनके व्यापारिक दांव-पेंच ने दोनों देशों को परमाणु युद्ध की कगार से खींच लिया। यह न केवल एक आत्ममुग्ध बयान था, बल्कि भारत की संप्रभुता, उसकी कूटनीतिक परिपक्वता और स्वतंत्र निर्णय शक्ति को कमतर आंकने की साहसिक कोशिश भी थी। लेकिन भारत ने अपने अडिग रुख और ठोस जवाब से इस दावे को धूल में मिला दिया, यह सिद्ध करते हुए कि उसकी शांति और शक्ति किसी बाहरी हस्तक्षेप की मोहताज नहीं।

ट्रंप का दावा उनके चिर-परिचित अंदाज में था - भारी-भरकम, आत्मप्रशंसा से लबरेज़ और तथ्यों से परे। उन्होंने कहा - हमने भारत और पाकिस्तान को युद्ध से रोका। यह परमाणु आपदा बन सकता था। बीते 21 दिनों में, उन्होंने कम से कम 10 बार इस बात को दोहराया, यहाँ तक कि एलन मस्क के प्रशासन से अलग होने की प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी यही राग अलापा। उनके मुताबिक, भारत पर 26% और पाकिस्तान पर 29% टैरिफ की मार ने दोनों देशों को न केवल शांति की मेज पर ला खड़ा किया, बल्कि परमाणु युद्ध की आशंका को भी टाल दिया। ट्रंप ने बिना किसी भारतीय या पाकिस्तानी नेता का नाम लिए, उन्हें "महान नेता" करार दिया, जिन्होंने कथित तौर पर उनकी मध्यस्थता को स्वीकार कर लिया। लेकिन यह दावा उस सच्चाई से कोसों दूर है, जिसे भारत ने अपने बलबूते पर रचा।

भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने दो-टूक शब्दों में ट्रंप के दावों की हवा निकाल दी। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के साथ सैन्य संघर्ष को समाप्त करने में किसी तीसरे देश की कोई भूमिका नहीं थी। यह शांति भारत और पाकिस्तान के बीच सीधे संवाद और भारत की कूटनीतिक रणनीति का परिणाम थी। यह बयान न केवल ट्रंप की बयानबाजी पर करारा प्रहार था, बल्कि भारत की उस स्वतंत्र विदेश नीति का भी ऐलान था, जो किसी बाहरी शक्ति के दबाव में झुकती नहीं। जयशंकर का यह रुख भारत की उस ताकत को रेखांकित करता है, जो अपनी सीमाओं की रक्षा और शांति स्थापना में आत्मनिर्भर है।

ट्रंप का बार-बार दोहराया गया दावा कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध रोका, एक तरह का राजनीतिक नाटक प्रतीत होता है। यह न केवल तथ्यों को तोड़ता-मरोड़ता है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की गरिमा को भी ठेस पहुँचाता है। भारत और पाकिस्तान का इतिहास तनावों और संघर्षों से भरा रहा है, लेकिन भारत ने हमेशा अपनी संप्रभुता को सर्वोपरि रखा। चाहे 1999 का कारगिल युद्ध हो, जहाँ भारत ने अपनी सैन्य ताकत से विजय हासिल की, या 2019 की बालाकोट एयरस्ट्राइक, जिसने आतंकवाद को करारा जवाब दिया — भारत ने बार-बार सिद्ध किया कि वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकता है। ट्रंप का यह दावा कि उनकी व्यापारिक रणनीति ने शांति स्थापित की, भारत की उस स्वतंत्रता और साहस को कमतर करता है, जिसने विश्व मंच पर उसकी साख बनाई।

ट्रंप ने जिस "व्यापार" को युद्ध का विकल्प बताया, वह वास्तव में आर्थिक दबाव का एक हथियार था। भारत और पाकिस्तान पर लगाए गए टैरिफ — 26% और 29% — न केवल व्यापारिक नीति थे, बल्कि भू-राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन का हिस्सा भी। ट्रंप का यह कहना कि - हम उन देशों के साथ व्यापार नहीं करते जो एक-दूसरे पर गोली चलाते हैं, एक सतही बयान है, जो भारत और पाकिस्तान जैसे परमाणु शक्ति संपन्न देशों की जटिल स्थिति को सरल बनाकर पेश करता है। यह सवाल उठता है कि क्या यह वास्तव में शांति की पहल थी, या वैश्विक शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में करने का एक प्रयास? क्या यह व्यापार था, या भारत और पाकिस्तान को अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने की चाल?

भारत की विदेश नीति का इतिहास गवाह है कि वह कभी भी बाहरी दबावों के सामने नहीं झुका। ऑपरेशन सिंदूर इसका ताज़ा उदाहरण है, जहाँ भारत ने न केवल सैन्य दृष्टिकोण से, बल्कि कूटनीतिक संवाद के ज़रिए भी स्थिति को अपने नियंत्रण में रखा। यह शांति कोई बाहरी मध्यस्थता का परिणाम नहीं थी, बल्कि भारत की रणनीतिक परिपक्वता, सैन्य शक्ति और संवाद की ताकत का नतीजा थी। भारत ने यह सिद्ध किया कि वह न केवल अपनी सीमाओं की रक्षा कर सकता है, बल्कि विश्व मंच पर अपनी स्वतंत्रता और गरिमा को भी अक्षुण्ण रख सकता है।

ट्रंप के दावे एक गहरे वैश्विक मुद्दे को भी उजागर करते हैं — शक्तिशाली देशों की वह प्रवृत्ति, जो दूसरों की उपलब्धियों को अपने नाम करने की कोशिश करती है। लेकिन भारत कोई कमज़ोर या अनभिज्ञ राष्ट्र नहीं। यह विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, एक परमाणु शक्ति संपन्न देश, जिसने अपनी नैतिक और कूटनीतिक ताकत से बार-बार विश्व को चकित किया है। भारत ने ट्रंप के दावों को न केवल खारिज किया, बल्कि यह भी स्पष्ट किया कि उसकी शांति और सुरक्षा की नीतियाँ किसी बाहरी हस्तक्षेप पर निर्भर नहीं।

सच यह है कि ट्रंप के शब्दों का शोर कितना भी तेज़ हो, वह उस सत्य को दबा नहीं सकता जो भारत ने अपने संकल्प से गढ़ा। भारत-पाकिस्तान के बीच स्थापित शांति न किसी व्यापारिक सौदे का नतीजा थी, न ही किसी तीसरे पक्ष की कृपा का। यह भारत की इच्छाशक्ति, उसकी सैन्य ताकत और कूटनीतिक दूरदर्शिता का परिणाम थी। यह वह ताकत थी जिसने न केवल युद्ध को टाला, बल्कि विश्व मंच पर भारत की साख को और मज़बूत किया।

जब इतिहास के पन्ने पलटे जाएँगे, तो वे ट्रंप के दावों के शोर को नहीं, बल्कि भारत के संकल्प की गूंज को दर्ज करेंगे। वे उस राष्ट्र की कहानी कहेंगे जिसने अपने साहस, विवेक और गरिमा से न केवल शांति स्थापित की, बल्कि विश्व को यह दिखाया कि सच्ची ताकत बाहरी हस्तक्षेप में नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान में निहित है। भारत की यह आवाज़ प्रचार के तूफानों में भी अडिग रहेगी — एक ऐसी गूंज जो सत्य, संकल्प और स्वतंत्रता की गाथा गाती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कृषक की गाथा — मिट्टी से मन तक

मिट्टी की महक से है उसकी आराधना,
खेत-खलिहान में वो करता नित नमन।
धूप-छाँव में जो तपे, जो झूके न कभी,
कृषक है धरती का सबसे बड़ा सजन।

खून-पसीने से लिखी उसकी यह कहानी,
संघर्ष की लौ में जलती है आह्वान।
फसलें बोए, सपने रोपे, मन के वीर,
हरियाली से भर दे वह वीरान मैदान।

बूंद-बूंद में समेटे अमृत सावन के,
हवा की मादक छुअन में बसी है जान।
वर्षा की थाप से गूँज उठे खेतों की रागिनी,
जिसमें हर बीज फूले, फलें आन-बान।

पर अब आए संकट, जुल्म और परेशानियाँ,
खतरा मंडरा रहा मिट्टी के इस मान।
कीटनाशक, प्रदूषण ने मारा तन-मन,
बूंद-बूंद में घुला विष, हो गया विस्तार।

पर किसान न हार मानता, ना झुकता कभी,
रखे जोश अटल, अडिग, सीना तान।
धरती माँ की पुकार सुने, नई राह चुने,
प्रकृति संग करे संवाद, ले जीवन ज्ञान।

परिवार का भार, ऋण का दंश, सब झेले,
फिर भी मुस्कुराए, आशा की ज्योति जलाए।
साझा करे सपनों को, बाँटे सुख-दुख,
कृषक के मन में नव युग के संदेश गूंजे।

चलो उठो किसान, नयी किरणों को पकड़ो,
सुरक्षित जीवन, स्वच्छ धरती का सपना सजा लो।
मिट्टी के इस मर्म को हम सब समझें आज,
धरती पर फिर से बसाएं, अमृत के झरने।

ऐसा किसान जो मिट्टी का हो सच्चा सखा,
वही बदल सकता है विश्व का भाग्य सारा।
मेहनत, प्रेम, समर्पण हो उसका हथियार,
तो होगा जीवन पुष्पित, होगा सारा संसार।

— प्रियंका सौरभ

"विकास बनाम विनाश: कुदरत के सबक को कब पढ़ेगा इंसान?"

पाँच साल पहले कोविड-19 लॉकडाउन ने जहां दुनिया की अर्थव्यवस्था को झकझोरा, वहीं पर्यावरण को राहत दी। वायु प्रदूषण, ग्रीनहाउस गैसों और औद्योगिक उत्सर्जन में गिरावट ने साबित किया कि प्रकृति को सुधारना संभव है। नदियाँ स्वच्छ हुईं, आसमान नीला दिखा, और हवा शुद्ध हुई। यह लेख महामारी के माध्यम से प्रकृति की चेतावनी और भविष्य के लिए सतत विकास के रास्ते की ओर इशारा करता है। अब भी यही वक्त है चेतने का।

डॉ. सत्यवान सौरभ

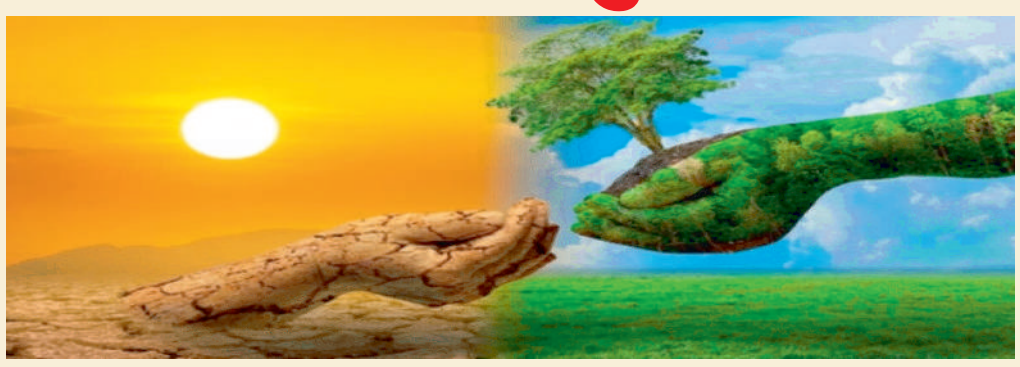

वैश्विक आर्थिक गतिविधियों में ठहराव का यह दौर बेशक चिंताजनक है, लेकिन पर्यावरण पर इसका अप्रत्याशित सकारात्मक असर दुनिया के लिए चेतावनी और सीख दोनों है। अनजाने में ही सही, जब मनुष्य ने अपनी गतिविधियाँ रोक दीं, तो कुदरत जैसे खुलकर सांस लेने लगी। पिछले कुछ महीनों से नदियों के बहाव में पारदर्शिता लौट आई, वायु प्रदूषण में अभूतपूर्व कमी देखी गई और आकाश फिर से नीला हो गया। यह सब देख कर मानो कुदरत पुकार कर कह रही हो— "हे मानव! अब तो संभल जा, पढ़ मेरी पीर!"

लॉकडाउन में सांस लेती धरती

पांच साल पहले कोविड-19 के कारण लागू लॉकडाउन ने इंसानी गतिविधियों को थाम दिया। औद्योगिक उत्सर्जन, वाहनों का धुआं और अनावश्यक यात्रा सब पर रोक लगी। इसके परिणामस्वरूप, वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसी गैसों का स्तर घटा, जिससे दुनिया भर के बड़े शहरों में वायु गुणवत्ता में बेहतरी देखी गई। शोध बताते हैं कि साल 2020 में वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में 5% की रिकॉर्ड कमी दर्ज हुई। यह बताता है कि वायु प्रदूषण की जड़ें हमारी जीवनशैली में छिपी हैं।

गंगा और यमुना जैसी नदियों में पानी पहले से कहीं अधिक साफ दिखा। उत्तर भारत की मैदानी जमीनों से हिमालय के हिमाच्छादित शिखरों का दीदार संभव हुआ। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि मनुष्य ने एक बार के लिए 'ठहरना' सीखा। यह एक ऐसा ठहराव था जिसमें धरती को आराम मिला और पर्यावरण को राहत।

क्या यह स्थायी हो सकता है?

पाँच साल पहले लॉकडाउन एक आपातकालीन परिस्थिति थी, न कि समाधान। लेकिन इसने हमें यह अहसास जरूर दिलाया कि प्रदूषण और पारिस्थितिकीय क्षरण मानव निर्मित हैं और इन्हें कम किया जा सकता है— अगर राजनीतिक इच्छाशक्ति और नागरिक संकल्प हो। लेकिन अफसोस, जैसे-जैसे लॉकडाउन हटा, वैसे-वैसे सब कुछ पहले जैसा होने लगा। प्रदूषण लौट आया, नदियाँ फिर से काली होने लगीं, कारखानों का धुआं फिर से आसमान ढंकने लगा।

हॉकिंग की चेतावनी और आज की सच्चाई

महान भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग ने चेतावनी दी थी कि यदि मनुष्य ने अपनी जीवनशैली और पर्यावरण के प्रति व्यवहार नहीं बदला तो उसे पृथ्वी को छोड़कर किसी अन्य ग्रह की शरण लेनी पड़ेगी। उनके अनुसार पृथ्वी की शेष उम्र महज 200 से 500 वर्षों की है। वे भविष्यवाणी करते थे कि या तो किसी धूमकेतु का टकराव, या सूर्य की विकिरण, या कोई महामारी पृथ्वी से जीवन मिटा देगी। कोविड-19 जैसी महामारी उनके कथन को और भी भयावह यथार्थ में बदल देती है।

अब भी समय है—परिवर्तन की राह

हमें यह स्वीकारना होगा कि अब विकास की परिभाषा बदलने की जरूरत है। 'अर्थव्यवस्था की वृद्धि' तब तक अधूरी है जब तक वह पारिस्थितिकीय स्थिरता को न छूती हो। हमें 'स्मार्ट ग्रोथ' से आगे बढ़कर 'ग्रीन ग्रोथ' की दिशा में सोचना होगा।

कम कार्बन उत्सर्जन वाली जीवनशैली अपनाना अब विकल्प नहीं, आवश्यकता बन चुकी है। यानी ऐसी जीवनशैली जो प्रकृति के साथ सामंजस्य में हो—उदाहरणस्वरूप साइकिल चलाना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता, ऊर्जा की बचत और उपभोग में संयम।

परिवहन और उद्योग में बदलाव जरूरी

भारत और विश्व के लिए अब समय है कि वह अपने उद्योग और परिवहन व्यवस्था को पर्यावरण-अनुकूल बनाए। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करते हुए सौर, पवन और अन्य हरित ऊर्जा स्रोतों की ओर अग्रसर होना होगा। वाहनों में इलेक्ट्रिक टेक्नोलॉजी का उपयोग बढ़ाना, रेलवे और सार्वजनिक परिवहन को सुलभ और स्वच्छ बनाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

यह बदलाव न केवल प्रदूषण कम करेगा, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव भी घटाएगा। वायु प्रदूषण से हर साल दुनिया भर में लगभग 70 लाख मौतें होती हैं। यह आंकड़ा जलवायु संकट की गंभीरता को दर्शाता है।

तत्काल और दीर्घकालिक कदमों की ज़रूरत

हमें ब्लैक कार्बन, मीथेन, हाइड्रोफ्लोरोकार्बन, ट्रोपोस्फेरिक ओजोन जैसे अल्पकालिक जलवायु प्रदूषकों को कम करने के लिए तत्काल नीतिगत फैसले लेने होंगे। इन गैसों का प्रभाव जलवायु पर तुरंत पड़ता है और इन्हें नियंत्रित करना तुलनात्मक रूप से आसान है।

भारत को एक राष्ट्रीय जनजागरूकता अभियान चलाना चाहिए जो जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जल और ऊर्जा संरक्षण जैसे मुद्दों को स्कूल-कॉलेजों से लेकर पंचायत स्तर तक ले जाए। क्योंकि यदि हमने पर्यावरण को नहीं समझा, तो कोविड-19 जैसे संकट आम बात हो जाएंगे।

पांच साल पूर्व कोविड-19: एक इशारा, एक अवसर था

कोरोना संकट ने हमें बहुत कुछ सिखाया—कैसे कम संसाधनों में भी जीवन जीया जा सकता है, कैसे घर में रहकर काम किया जा सकता है, कैसे जरूरतों को सीमित किया जा सकता है। यह एक 'प्राकृतिक अनुशासन' था जिसने हमें हमारे अति-उपभोक्तावाद पर सोचने को मजबूर किया।

अब हमें चाहिए कि इस संकट से निकली सीख को भविष्य की नीतियों और जीवनशैली में जगह दें। यह एक मौका है—एक 'रीसेट बटन'। प्रकृति ने हमें चेताया है, अब हमें प्रतिक्रिया देनी होगी।

धरती की पुकार और हमारी ज़िम्मेदारी

हमारी धरती सिर्फ एक ग्रह नहीं, हमारा घर है। हमने उसे मां कहा है, लेकिन व्यवहार उपभोक्ता जैसा किया है। अब समय है कि हम केवल 'धरती माता की जय' बोलने की जगह धरती माता की रक्षा में खड़े हों। हमें जंगलों, नदियों, पहाड़ों, पशु-पक्षियों और पूरे जैव विविधता तंत्र को बचाना होगा।

"धरती खाली-सी लगे, नभ ने खोया धीर!
अब तो मानव जाग तू, पढ़ कुदरत की पीर!"

आगे की राह: प्रकृति के साथ साझेदारी

जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरण का मसला नहीं है, यह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौती भी है। यदि हमने पर्यावरण को अनदेखा किया, तो कृषि, स्वास्थ्य, रोजगार, और खाद्य सुरक्षा जैसे क्षेत्र भी संकट में आ जाएंगे।

आज की सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि हम विज्ञान, तकनीक और परंपरागत ज्ञान के समन्वय से ऐसी नीतियां बनाएं जो टिकाऊ विकास को संभव बनाएं। स्कूलों में जलवायु शिक्षा हो, गाँवों में हरित रोजगार के अवसर हों, शहरों में स्वच्छ परिवहन और स्वच्छ ऊर्जा की व्यवस्था हो।

अंत में — मानव बनाम प्रकृति नहीं, मानव + प्रकृति

यह संघर्ष ₹मनुष्य बनाम प्रकृति₹ का नहीं होना चाहिए। यह साझेदारी ₹मनुष्य + प्रकृति₹ की होनी चाहिए। प्रकृति को जीतना नहीं, समझना और संजोना है। कोविड-19 ने इस सच को हमारे सामने रख दिया है। अब यह हम पर है कि हम इस सच्चाई को स्वीकार करें या फिर विनाश की ओर आंख मूंद कर बढ़ते रहें।

प्रकृति का प्रतिशोध

— एक चेतावनी गीत

मत छेड़ प्रकृति को मानव!
यह मौन नहीं, ज्वाला है।
जिसको तू निर्बल समझे,
वो अग्नि-कणों की माला है।

बिजली बन कर टूटेगी,
जो तूने हरियाली छीनी,
आँधी बनकर फट पड़ेगी,
जो नदियों की गरिमा छीनी।

हिमगिरि के हिम पिघलेंगे,
समुद्र जब बाँध तोड़ देगा,
तू साधन की आस करेगा,
वह साधना ख़ुद छोड़ देगा।

तेरे कारखानों की साँसें,
मेरे वनों को खा गईं,
तेरे लोभ की लहरों में,
गंगा भी घुट-घुट बह गई।

जिस धरती पर खेला बचपन,
जिस नभ में उड़ते थे खग,
उसको ही तूने गंदा कर,
अब माँ से कर बैठा युद्ध!

रूका था तू लॉकडाउन में,
जब कुदरत हँस दी थी तन से,
फूलों में फिर रंग जगे थे,
बिजली चमकी थी मन से।

पर तू न सुधरता, मानव!
तेरा पाप बड़ा है भारी,
तू धर्म करे विज्ञान से,
पर नैतिकता तेरी हारी।

चेतावनी यह अंतिम है,
फिर रुख मेरा परिवर्तन है,
मैं क्षमा न करूँगी, जब-जब
तेरा लोभ हो निर्धारण है।

अरे! धरा की कोख जलाकर,
क्या तुम स्वर्ग बनाओगे?
जब श्वासों में जहर घुला हो,
किस जीवन को बचाओगे?

हवा रुदन कर कहती है,
₹मुझे मत और प्रदूषित कर,
मैं जीवन हूँ, मृत्यु नहीं,
मुझको विष से मत विचलित कर!₹

बबूल बोया है तूने,
आम कहाँ से पाएगा?
प्रकृति अगर रूठ गई तो,
कोई और नहीं बचाएगा।

ओ मनुज! विकास के नाम पर,
जो विनाश तू कर आया,
वह काल स्वयं बनकर आएगा,
तेरा अंत अब लाया।

तब जागो, अब भी समय है!
हर वृक्ष बने फिर मित्र तुम्हारा।
धरती को माँ कह कर जी लो,
वरना छिनेगा हक़ तुम्हारा!

--- डॉ सत्यवान सौरभ

कलंक नहीं, जीवन की मजबूरी का नाम है सेक्स वर्क

[हर ठुकराई हुई ज़िंदगी, एक ज़िम्मेदार समाज का आईना है]

जब समाज की रोशनी केवल मंचों और महलों तक सीमित रह जाए, तब उसकी असली पहचान अंधेरे कोनों में पनपती है — वहीं जहां हाशिए पर खड़ी आत्माएं अपना अस्तित्व बचाने की जद्दोजहद कर रही होती हैं। सेक्स वर्कर (यौनकर्मी) —जो रात की चुप्पियों में अपने हक़ और गरिमा के लिए लड़ते हैं — क्या हमने उन्हें इंसान की तरह देखा है, या बस एक कलंक की तरह? क्या हमने कभी उनकी ख़ामोश निगाहों में वो चीखें सुनी हैं, जो समाज की बेरुख़ी पर सवाल उठाती हैं? 2 जून — अंतर्राष्ट्रीय सेक्स वर्कर दिवस — सिर्फ एक तारीख नहीं, यह एक दस्तक है हमारे ज़मीर पर। यह दिन हमें याद दिलाता है कि इंसानियत का असली इम्तिहान तब होता है, जब हम सबसे अदृश्य और सबसे उपेक्षित को भी उतनी ही इज़्ज़त देते हैं, जितनी खुद को। यह दिवस हमें उन कहानियों की ओर मोड़ता है जिन्हें सुनने की हमने कभी फुर्सत नहीं ली — पर जो हमारे समाज की असली नींव हैं।

1975 का वह दिन, जब फ्रांस के लियोन शहर में सेंट-निज़िएर चर्च की सीढ़ियों पर करीब सौ यौनकर्मियों ने पुलिसिया अत्याचार, हिंसा और सामाजिक तिरस्कार के खिलाफ आवाज बुलंद की, इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। वह सिर्फ एक धरना नहीं था; वह एक क्रांति की शुरुआत थी। वह उन औरतों, पुरुषों और ट्रांसजेंडरों की चीख थी, जिन्हें समाज ने 'पाप' का ठप्पा लगाकर अदृश्य कर दिया। तब से 2 जून दुनियाभर में यौनकर्मियों के संघर्ष, उनकी गरिमा और उनके अधिकारों की प्रतीक बन गया। यह दिन हमें याद दिलाता है कि सेक्स वर्क, चाहे मजबूरी हो या पसंद, एक पेशा है। यह श्रम है, जीवटता है, और सबसे बढ़कर, यह इंसानियत की कहानी है।

भारत में यौनकर्मियों की जिंदगी किसी युद्ध से कम नहीं। एक अनुमान के मुताबिक, देश में 8-10 लाख यौनकर्मी हैं, जिनमें ज्यादातर महिलाएं और ट्रांसजेंडर हैं। इनमें से कई लोग गरीबी, मानव तस्करी या सामाजिक दबाव के कारण इस पेशे में धकेल दिए जाते हैं। 2022 में सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसले में सेक्स वर्क को पेशा माना, सहमति से काम करने वालों को पुलिस उत्पीड़न से बचाने और सम्मान देने की बात कही। लेकिन हकीकत में, कानूनी अस्पष्टता और सामाजिक तिरस्कार के बीच यौनकर्मी आज भी फंसे हैं। इम्मोरल ट्रैफिक प्रिवेंशन एक्ट (आईटीपीए) 1956 जैसे कानून, जो वेश्यालय चलाने या सार्वजनिक स्थानों पर ग्राहक ढूंढने को अपराध मानते हैं, यौनकर्मियों को छिपकर काम करने को मजबूर करते हैं। इस छिपाव में उनकी सुरक्षा, सम्मान और स्वास्थ्य सब दांव पर लग जाता है।

स्वास्थ्य सेवाओं की कमी यौनकर्मियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। राष्ट्रीय एड्स

नियंत्रण संगठन (एनएसीओ) के 2020 के आंकड़ों के अनुसार, यौनकर्मियों में एचआईवी प्रसार दर 1.85% थी, जो सामान्य आबादी (0.22%) से कहीं ज्यादा है। फिर भी, मुफ्त स्वास्थ्य जांच, दवाइयां या परामर्श की सुविधा तक उनकी पहुंच सीमित है। इसके अलावा, उनके बच्चों को स्कूलों में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। एक अध्ययन के मुताबिक, 70% से ज्यादा यौनकर्मियों ने अपने पेशे के कारण हिंसा झेली है — चाहे वह पुलिस का डंडा हो, ग्राहकों का क्रूर व्यवहार हो, या समाज का ठंडा तिरस्कार। यह हिंसा सिर्फ शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक भी है।

यौनकर्मियों के लिए सिर्फ कानूनी मान्यता ही काफी नहीं। उन्हें चाहिए एक ऐसी व्यवस्था, जो उन्हें सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं और पुनर्वास के अवसर दे। जो इस पेशे में रहना चाहते हैं, उन्हें गरिमा के साथ जीने का हक मिले। जो इससे बाहर निकलना चाहते हैं, उन्हें शिक्षा, रोजगार और सम्मानजनक जिंदगी का रास्ता दिखे। उनके बच्चों को समाज की मुख्यधारा में शामिल होने का मौका मिले, बिना किसी भेदभाव के। भारत में संगठन जैसे दुरबार महिला समन्वय समिति और संवेदना इस दिशा में काम कर रहे हैं। वैश्विक स्तर पर एनएसडब्ल्यूपी जैसे संगठन यौनकर्मियों के अधिकारों के लिए आवाज उठा रहे हैं। 2024 में अंतर्राष्ट्रीय सेक्स वर्कर दिवस पर कई ऑनलाइन और ऑफलाइन अभियान चले, जिन्होंने नीति निर्माताओं तक उनकी मांगों को पहुंचाने की कोशिश की।

लेकिन क्या सिर्फ कानून और संगठन बदलाव ला सकते हैं? सच्चा बदलाव तब आएगा, जब हमारी सोच बदलेगी। जब हम यह समझेंगे कि यौनकर्मी कोई 'दूसरे' लोग नहीं, बल्कि हमारे ही समाज का हिस्सा हैं। उनकी पीड़ा हमारी पीड़ा है, उनके अधिकार हमारे अधिकार हैं। हमें यह स्वीकार करना होगा कि सेक्स वर्क को 'पाप' या 'शर्म' का पर्याय बनाना, असल में हमारी संकुचित सोच का परिणाम है।

2 जून का यह दिन हमें एक दर्पण दिखाता है। यह पूछता है कि क्या हम वाकई एक ऐसे समाज के हकदार हैं, जो इंसानियत का दावा करता है? अगर हां, तो हमें चुप्पी तोड़नी होगी। हमें यौनकर्मियों के साथ खड़ा होना होगा — न केवल उनके अधिकारों के लिए, बल्कि उनकी गरिमा, उनके सपनों और उनकी इंसानियत के लिए। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हर इंसान की आवाज मायने रखती है, हर जिंदगी की कीमत है। इस 2 जून को एक वादा करें — एक ऐसा समाज बनाने का, जहां कोई अदृश्य न रहे, जहां हर दिल की धड़कन सुनी जाए, और जहां हर इंसान को उसका हक, उसका सम्मान, और उसकी जगह मिले। क्योंकि इंसानियत का असली रंग तभी उभरता है, जब हम अपने सबसे अनदेखे भाई-बहनों को गले लगाते हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

दिलीप प्रधान कोंग्रेस छोड़ कर बिजेड़ी मे शामिल

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कांग्रेस विधायक प्रत्याशी दिलीप प्रधानी ने हाथ फैलाकर शंख पकड़ा हुआ है. दिलीप प्रधानानी औपचारिक रूप से नबरंगपुर जिला वीजेडी अध्यक्ष मनोहर रंधारी, राज्यसभा सांसद मुन्नाखा, रमेश माझी और सदाशिव प्रधान की उपस्थिति में शंख भवन में वीजेडी में शामिल हुए।गौरतलब है कि 2024 के आम चुनाव में खुदी कैशल्या प्रधान बीजद उम्मीदवार थीं, जबकि दिलीप ने कांग्रेस उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ा था।बाद में भाजपा के गौरीशंकर माझी ने जीत दर्ज की। इस बीच आदिनिय वर्ष जैसे राजनीतिक समीकरण में आए बदलाव से जिले की राजनीति में भूचाल आ गया है। कांग्रेस छोड़कर बीजद में शामिल होने के पीछे राजनीतिक मकसद को लेकर खूब चर्चा हो रही है।ओड़िशा कोंग्रेस अधख्य भक्त चरण दास का संगठन की ऊपर प्रश्न उठी ।

ओडिशा में पहले कोविड मरीज की मौत!

मनोरंजन सासमल स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: राज्य में इस साल की पहली कोविड मौत। खबर है कि भुवनेश्वर के एक कोविड मरीज की मौत हो गई है। कुछ दिन पहले ही उसे कोविड का पता चला था। वह कोविड के साथ-साथ कई बीमारियों से पीड़ित था। मृतक एक बुजुर्ग व्यक्ति है, जिसका घर पर ही इलाज चल रहा था। इस बारे में स्वास्थ्य विभाग की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है।ओडिशा में कोविड के मामलों में कोई बढ़ोतरी नहीं होने का दावा कर रही राज्य सरकार को बड़ा झटका लगा है। हर दिन कोविड के मरीज सामने आ रहे हैं। आज दो और संदिग्धों की पहचान की गई है, जिससे मरीजों की संख्या 8 हो गई है। इनमें से एक की पहचान एंटीजन जांच के जरिए कोविड के रूप में हुई है। स्वास्थ्य विभाग उसकी आरटीपीसीआर रिपोर्ट का इंतजार कर रहा है। दूसरी ओर, आरएमआरसी ने बताया है कि राज्य में इस्तेमाल होने वाली एंटीजन किट ठीक से काम कर रही है। जिसे लेकर स्वास्थ्य विभाग ने चिंता जताई है कि आठवें मरीज की आरटीपीसीआर रिपोर्ट कोविड पॉजिटिव आएगी। अब तक पहचाने गए 8 मरीजों में से 6 खोरधा जिले के हैं, जबकि बाकी दो की पहचान कटक जिले से हुई है।

छोटी सी मुस्कान, उम्मीद की किरण

रहमदिली का कोई भी अमल, चाहे वो कितना भी छोटा क्यों ना हो, कभी बेकार नहीं जाता। इस जुमले के मायने और अहमियत बहुत गहरी है। इसका मतलब ये है कि जब भी हम किसी के साथ रहम, हमदर्दी या मदद का सुलूक करते हैं, चाहे वो बहुत छोटा सा अमल हो, जैसे किसी को मुस्कुरा कर देखना, किसी को रास्ता दिखा देना, या किसी ज़रूरतमंद की मामूली सी मदद करना, तो वो कभी ज़ाया नहीं जाता। उसका कोई ना कोई मुसबत असर ज़रूर होता है।

रहमदिली के छोटे-छोटे आमाल भी एक चेन रिएक्शन की तरह होते हैं। जैसे आप किसी की मदद करते हैं, वो शख़्स ख़ुश होता है और शायद आगे किसी और की मदद करता है। इस तरह रहमदिली का असर फैलता जाता है।

अगर आप किसी अजनबी को रास्ता पार करवाते हैं, तो वो शख़्स भी पूरा दिन ख़ुश रहता है और शायद किसी और की मदद कर देता है।

अक्सर छोटी-छोटी रहमदिल बातें किसी के दिन को बेहतर बना सकती हैं। ये शख़्स के एतमाद और ज़हनी हालत को भी मुसबत बना देती हैं। ये जज़्बाती मदद भी हो सकती है।

किसी उदास दोस्त को अच्छा पैग़ाम भेजना या उसे गले लगाना, ये छोटा सा अमल उसके लिए बहुत अहम हो सकता है।

जब लोग एक-दूसरे के लिए रहमदिल होते हैं, तो मुआशरे में एतमाद और तआवुन (सहयोग) की फिज़ा बढ़ती है। इससे मुआशरा मज़बूत और ख़ुशहाल बनता है।

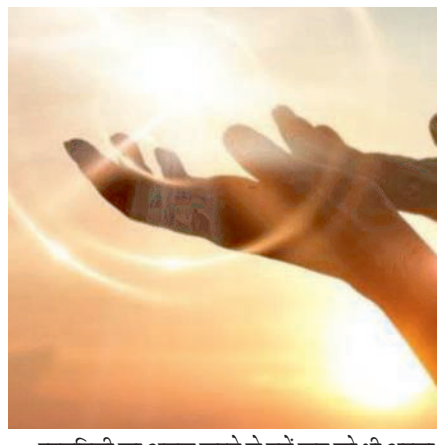

रहमदिली का अमल करने से हमें खुद को भी अच्छा महसूस होता है। ये हमारी रूह को सकून और खुशी देता है।

रहमदिली का कोई भी अमल, चाहे वो कितना भी छोटा क्यों ना हो, कभी ज़ाया नहीं जाता, क्योंकि वो किसी ना किसी सूरत में, किसी ना किसी की ज़िंदगी में, मुसबत तबदीली ज़रूर लाता है। ये एक बीज की तरह है, जो वक्त के साथ फल देता है।

"एक छोटी सी मुस्कान भी किसी के लिए उम्मीद की किरण बन सकती है।"

डॉ. मुश्ताक़ अहमद
शाह सहज़, हरदा, मध्य प्रदेश.

याद आयेंगे लम्हात बहुत

मालुम न था के आँखों से होगी
कभी बरसात बहुत,
वो रुठ गया, पता न था, याद
आयेंगे लम्हात बहुत,

अनजान राहों के थे मुसाफिर कभी
मैं भी तुम भी,
चलते चलते राह में आगये जुदाई
के तूफ़ान बहुत,

सदाएँ हर तरफ अब भी तेरी सुनाई
देती हैं, मुझे,
बेगाना मैं, इस तरह बह जाएंगे मेरे
अरमान बहुत,

मुहब्बत के चराग़ अचानक जल
उठे दीदार जे तेरे,
फ़रि सफ़र ज़दिगी का क्यूं होगया
सुनसान बहुत,

ढूंढा ,किया तलाश गली गली
आवाज़ भी दी तुझको,
तुझसा न मिला इंसान ,लोग थे
यहाँ "मुश्ताक़" बहुत,

डॉ . मुश्ताक अहमद शाह
"सहज़"
हरदा मध्यप्रदेश

पिता का प्यार अनमोल और अद्वितीय होता है

बाप और सूरज दोनों की गर्मी बर्दाश्त कर लिया करो,
जब ये डूब जाएँ, तो फिर कुछ नहीं बचता जिंदगी में।
सूरज तो हर सुबह फिर से निकल आता है,
मगर बाप जब चला जाता है,
तो जिंदगी में सिर्फ खालीपन और दर्द ही रह जाता है।बाप की डाँट, उसकी फिक्र,
कभी-कभी उसकी सख्ती में भी उसका प्यार छुपा होता है।उसकी छाँव में ही तो हम सुकून से जीना सीखते हैं।जब तक बाप है,हर मुश्किल आसान लगती है।उसके जाने के बाद
जिंदगी में एक अधूरापन सा रह जाता है,
जैसे आसमान से सूरज ही गायब हो गया हो।
इसलिए,बाप की बातों, उसकी नाराज़गी,
और उसकी तपिश को भी प्यार से सह लेना चाहिए।क्योंकि जब वो नहीं रहेगा,
तो उसकी यादें ही रह जायेंगी जो दिल से कई ऐसे सवाल पूछेंगी जिनका जवाब मुमकिन न होगा।
पिता का स्थान कोई नहीं ले सकता। उसकी मौजूदगी में ही जीवन की असली रौनक है। उसकी कद्र करें, जब तक वो आपके साथ है।
बाप का प्यार एक बार चला जाए तो वह कभी लौटकर नहीं आता क्योंकि पिता की जगह और उनका स्नेह कोई दूसरा नहीं भर सकता,सूरज की तरह पिता हमारे जीवन को रौशन करते हैं, पर उनके जाने के बाद जीवन में एक खालीपन और अंधेरा सा छा जाता है, जिसे कोई और रोशनी दूर नहीं कर सकती पिता का प्यार अनमोल और अद्वितीय होता है,उसकी कमी पूरी जिंदगी महसूस होती है।

डॉ.मुश्ताक अहमद
शाह सहज
हरदा मध्य प्रदेश

झारखंड के स्कूलों फर्जीवाड़ा खत्म करने हेतु यूडायस प्रणाली होगा लागू

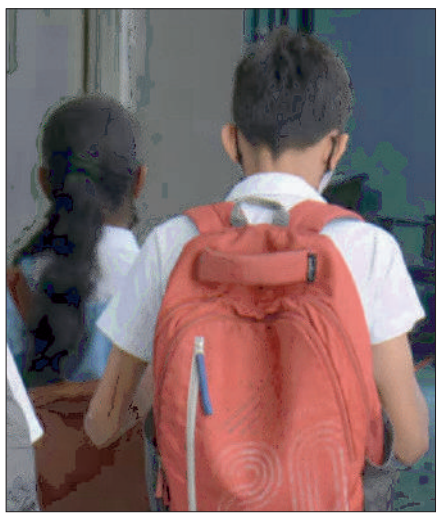

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। झारखंड शिक्षा विभाग यूडायस प्रणाली से खत्म करेगा फर्जीवाड़ा। सभी विद्यार्थियों का आधार सत्यापन शैक्षणिक सत्र के आंकड़ों का अपडेट बिआरपी ,सीआरपी से लिंक का निर्णय शिक्षा के क्षेत्र में पारदर्शिता और ईमानदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लिया गया है। यहां आरंभ होने जा रहा यूडायस प्लस एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है, जिसका उपयोग स्कूलों में छात्रों की जानकारी और शैक्षणिक रिकॉर्ड को प्रबंधित करने के लिए किया जाता है। इस प्रणाली के माध्यम से शिक्षा विभाग को स्कूलों की गतिविधियों पर नज़र रखने में मदद मिलती है। नए आदेश के अनुसार, सभी स्कूलों को इस प्रणाली में सही और सटीक जानकारी दर्ज करने के लिए निर्देशित किया गया है । किसी भी प्रकार के फर्जीवाड़े की पहचान के लिए विशेष निगरानी की जाएगी। इसके लिए तकनीकी उपायों को लागू किया जाएगा, जिससे डेटा की सत्यता की जांच की जा सके। विभाग ने सभी स्कूलों को निर्देशित किया है कि वे इस प्रणाली का सही ढंग से उपयोग करें और किसी भी प्रकार की अनियमितता की सूचना तुरंत दें ।यह आदेश शिक्षाके स्तर को सुधारने की दशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा । विभाग मानता है इस उपाय से फर्जी बाड़े नहीं होंगे।

क्लीन डवलपमेंट मेकनिज़्म और संयुक्त क्रियान्वयन से कम होगी ग्लोबल वार्मिंग !

अभी जून के महीने की शुरुआत ही हुई है और मार्च से ही लगातार ताबड़तोड़ गर्मी पड़ रही है। आज भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का लगातार सामना कर रहा है। आज संपूर्ण विश्व में सबसे बड़ी चिंताएं या तो पर्यावरण प्रदूषण को लेकर हैं अथवा ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन को लेकर। ग्लोबल वार्मिंग को लेकर हाल ही में विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने एक रिपोर्ट जारी की है ।रिपोर्ट में यह चेतावनी दी गई है कि 80 प्रतिशत संभावना है कि साल 2025 और 2029 के बीच के साल 2024 से ज्यादा गर्म होंगे। दूसरे शब्दों में कहें तो

अगले पांच वर्षों में कम से कम एक साल 2024 से अधिक गर्म होने की संभावना है, जिसे अब तक का सबसे गर्म वर्ष माना गया है। जानकारी के अनुसार 1850-1900 के औसत तापमान की तुलना में सतही तापमान 1.2 डिग्री से 1.9 डिग्री सेल्सियस तक रह सकता है ।यह बहुत ही चिंताजनक है कि साल 1880 से जब से तापमान के बारे में रिकार्ड रखना शुरू किया गया, उनमें से पिछले 11 साल, लगातार अब तक के रिकॉर्ड में सबसे गर्म रहे हैं। पाठकों को बताता चलूं कि रिपोर्ट में डब्लूएमओ ग्लोबल एनुअल टू डेकाडल क्लाइमेट अपडेट (2025-2029) ने यह भी अनुमान लगाया है कि 70 प्रतिशत संभावना है कि 2025-2029 के लिए पांच साल का औसत तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस को पार कर जाएगा, जिससे धरती पर लगातार और गंभीर हीटवेव, सूखा जैसे हालात होंगे ।यह पिछले साल की साल 2024-2028 के लिए डब्लूएमओ रिपोर्ट में बताई गई 47 प्रतिशत संभावना और साल 2023-2027 के लिए 2023 रिपोर्ट में बताई गई 32 प्रतिशत संभावना से ज्यादा है। वास्तव में, यह सीमा अहम और महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि, यह पेरिस समझौते के लक्ष्यों में से एक है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि साल 2015 के पेरिस जलवायु समझौते के तहत वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों की तुलना में दो डिग्री सेल्सियस से नीचे और यदि संभव हो तो 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने का लक्ष्य रखा गया था। आज हम कोयला, तेल और गैस का औद्योगिक पैमाने पर इस्तेमाल लगातार कर रहे हैं और वैज्ञानिक यह बात मानते हैं कि 1.5 डिग्री सेल्सियस का लक्ष्य लगभग असंभव हो गया है, क्योंकि कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन अभी भी धरती पर बहुत तेजी से बढ़ रहा है। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि जब भी धरती का तापमान बढ़ता है तो इसके बहुत ही दूरगामी और व्यापक असर पड़ते हैं। मसलन, इससे संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्थाओं, हमारे दैनिक जीवन, हमारी पारिस्थितिकी प्रणालियों, वनस्पतियों, जीवों या यूं कहें कि हमारे पूरे नीले ग्रह पर इसका नकारात्मक प्रभाव बढ़ता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इससे (ग्लोबल वार्मिंग से) कहीं न कहीं सतत विकास का जोखिम बढ़ता है। बहरहाल,रिपोर्ट के अनुसार, तापमान वृद्धि से चरम मौसमी घटनाएं और गंभीर होंगी, जैसेः अधिक गर्मी और भारी बारिश। ग्लोबल वार्मिंग बढ़ती है तो इससे सूखा, बर्फ का पिघलना, और समुद्र के जलस्तर में वृद्धि जैसी घटनाएं घटित होतीं हैं तथा समुद्र का तापमान भी बढ़ता है और इससे समुद्री जीवन प्रभावित होता है।ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, भारत, चीन और घाना में बाढ़, कनाडा में जंगल की आग ग्लोबल वार्मिंग के उदाहरण कहे जा सकते हैं। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि यूके मौसम विभाग(यूके मेट आफिस) ने भी 2025 के लिए एक जलवायु पूर्वानुमान रिपोर्ट जारी की है, जिसमें 2025 को अब तक के तीन सबसे गर्म वर्षों में से एक होने की संभावना व्यक्त की गई है। इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि 2025 में वैश्विक औसत तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो सकता है। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं

कि विश्व मौसम विज्ञान संगठन और यूके मेट आफिस दुनिया की दो सबसे शीर्षस्थ एजेंसियां हैं जो कि जलवायु पूर्वानुमान रिपोर्ट जारी करतीं हैं। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि मानवीय ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन जलवायु परिवर्तन का आज एक मुख्य कारण है । ग्लोबल वार्मिंग पर इनके प्रभाव विनाशकारी हैं और यह अधिकाधिक आवश्यक होता जा रहा है कि इन उत्सर्जनों को कम किया जाए, ताकि मानव को ग्रह पर इतना दबाव डालने से रोका जा सके। स्थिति इतनी गंभीर है कि अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) ने अनुमान लगाया है कि यदि हम इसी तरह जारी रखेंगे तो 2050 तक उत्सर्जन में 130% की वृद्धि होगी । यह विडंबना ही कही जा सकती है कि क्योटो प्रोटोकॉल जैसे समझौतों के बावजूद, कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में वृद्धि जारी है। वैसे कमोबेश विश्व के लगभग सभी देश वैश्विक प्रदूषण के उच्च स्तर के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन एक रिपोर्ट के अनुसार चीन (30 प्रतिशत), संयुक्त राज्य अमेरिका (15 प्रतिशत), भारत (7 प्रतिशत), रूस(5 प्रतिशत) और जापान (4 प्रतिशत) वैश्विक प्रदूषण के लिए जिम्मेदार देश हैं। इनमें भी चीन का निर्यात बाजार बहुत बड़ा है जो किसी भी अन्य देश की तुलना में अधिक डाइऑक्साइड उत्सर्जित करता है। यहां यदि हम भारत की बात करें तो विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि दुनिया के 15 सबसे प्रदूषित शहरों में से 14 भारत में हैं। देश में वायु गुणवत्ता की सुरक्षा के लिए 1981 से ही कानून लागू है, लेकिन जीवाश्म ईंधनों के जलने की दर में काफी वृद्धि हुई है और इसके परिणामस्वरूप भारत विश्व में सर्वाधिक प्रदूषण फैलाने वाले देशों की रैंकिंग में तीसरे स्थान पर है। वहीं पर रूस तेल, कोयला, गैस और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता के कारण बड़ी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन करता है। यदि हम यहां पर जापान की बात करें तो जापान विश्व में जीवाश्म ईंधन का सबसे बड़ा उपभोक्ता और ग्रीनहाउस गैसों का पांचवा सबसे बड़ा उत्सर्जक है। बहरहाल, यह दुर्भाग्य की बात है कि दुनिया के बड़े और विकसित देश आज कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए प्रतिबद्ध नहीं दिख रहे हैं। इससे भी बड़ी विडंबना यह है कि दुनिया के समृद्ध देश आज कार्बन उत्सर्जन कम करने को अपना दायित्व नहीं मानते और न ही अपनी सामर्थ्य के अनुसार अधिक धन देने के लिए ही तैयार नजर आते हैं। हालांकि इसी बीच अच्छी बात यह भी है कि भारत ने 2070 तक कार्बन तटस्थता का लक्ष्य निर्धारित किया है, और यूरोपीय संघ ने 2050 तक 'शुद्ध-शून्य' उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है। कई अन्य देशों ने भी जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए उत्सर्जन में कमी करने के लक्ष्य निर्धारित किए हैं, जैसे कि ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना और नवीकरणीय ऊर्जा पर स्विच करना। पाठकों को बताता चलूं कि भारत ने उत्सर्जन तीव्रता में कमी लाने के लिए 'कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम, 2023' को अधिसूचित किया है। इतना ही नहीं, भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा पर स्विच करने और ऊर्जा दक्षता में सुधार करने के लिए कई योजनाएं और नीतियां बनाई हैं, जैसे कि सौर ऊर्जा का उपयोग करना आदि। अंत में यही कहूंगा कि ग्लोबल वार्मिंग आज किसी देश विशेष की समस्या नहीं है, अपितु यह हम सभी की एक सामूहिक समस्या है और इसके लिए हमें एक दूसरे के सहयोग के साथ आगे आना होगा और पूर्ण प्रतिबद्ध और कृतसंकल्पित होकर काम करना होगा। वास्तव में ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए वर्ष 1997 के क्योटो प्रोटोकॉल द्वारा विकसित देशों को जो तीन विकल्प क्रमशः अंतर्राष्ट्रीय उत्सर्जन व्यापार, क्लीन डवलपमेंट मेकनिज़्म और संयुक्त क्रियान्वयन पर मुस्तैदी और पूरी तन्मयता से काम करना होगा तभी हम इस गहराती समस्या से निपट सकेंगे।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail .com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**